website : www.sikhworld.info

इस वैब साईट की विशेषता

प्रिये गुरुमत के पाठकजनों। आपके चरणों में विनम्र विनती है कि आप को किसी भी **Library** में जाने की आवश्यकता नहीं है, अब आपके पास इस आधुनिक युग में एक विशेष **Website** उपलब्ध हैं जिसका नाम है **www.sikhworld.info** यह **Website** मूल रूप में सिक्ख इतिहास की है इस में सभी पुस्तकें बहुत विस्तृत रूप में तथा रोचकशैली में दो भाषाओं हिन्दी, तथा पंजाबी में उपलब्ध है। इस के प्रथम भाग श्री गुरू नानक देव जी से लेकर श्री गुरू गोबिंद सिंघ तक फिर दूसरे भाग में बन्दा बहादुर से लेकर स्वतंत्रता तक सिक्ख इतिहास है। ये पुस्तकें **Period-wise & Serial-wise** उपल्बध है। इसके अतिरिक्त गुरूवाणी अंताक्षरी, गुरूपर्व बुकलेट इत्यादि अनेकों गुरुमत सामग्री क्रमवार पड़ी हैं। ये सभी पुस्तकें **Down Load Free** हैं। अब मैं जो आप को महत्त्व पूर्ण बात बताने जा रहा हूँ । वह यह है कि इस **Website** के **Main Links** में एक फौजी नावल (**उपन्यास**) मित्र मण्डली है जिस में सभी भारतीय सैनिक दक्षिण तथा उत्तर भारत के हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई इत्यादि इक्ट्ठे बैरकों में मिल-जुल कर रहते हैं जो कि अवकाश के समय आपस में चुटकुले-शायरों-शायरी अथवा भांगड़ा नृत्य इत्यादि करते हैं उनकी जीवनशैली **Life-Style** पढ़ने योग्य है उनकी एक फौजी भाभी जी है जो उनका समय-समय पर मार्ग दर्शन करती है अत: यह नावल पढ़ने योग्य है, यह जहां मनोंरजन करती है वही ज्ञान वर्धक तथा परस्पर प्यार ही प्यार बांटती है।

नोटः कृप्या आप अपने मोबाईल में इस Sticker का फोटो ले ले और अपने मित्रगणों को WhatsApp कर दें। –धन्यावाद

१ ओअंकार (ੴ) सतिगुर प्रसादि ।।

गुरबाणी अंताक्षरी

मुख्य लक्ष्य

युवा पीड़ी को गुरवाणी कंठस्थ करवाना

प्रकाशक :

क्रांतिकारी जगत गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

लेखकः जसबीर सिंघ
Mob. 99881-60484
62390-45985

Type Setting by :
Radheshyam Choudhary
Mob. : 098149-66882

नि:शुल्क = भेटा रहित। कृप्या करके यह किताबचा दूसरे पाठकों को पढ़ने के लिए भेट करें।

भूमिका

वर्तमान युग में युवा पीड़ी को गुरमति साहित्य अथवा गुरुवाणी की तरफ आकर्षित करने के लिए सभी सिक्ख संस्थाएं अपनी-अपनी विधि से सिक्खी का प्रचार एवं प्रसार करने के उपाए कर रही हैं।

वास्तव में समय की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए नव युवकों को उनकी रुचियों के अनुकूल कुछ नया देना होता है जो कि हम उनको बदल के रूप में नहीं दे पा रहे। इस लिए आवश्यकता है कुछ ऐसा भाव पूर्ण बदल खोजने की जो कि हमारी भावी पीड़ी में लोकप्रिय हो जाये अतः किशोर-किशोरियों सहिज में गुरमति के रंग में रंगे जाए, अतः युवा पीड़ी को शेर-ओ-शायरी के द्वारा गुरवाणी अतांक्षरी के नाम से गुरमति के आदर्श सिद्धांत को कंठस्थ करवाना तथा उन को जीवन में दृढ़ करवाना है। एक छोटे सर्वेक्षण से इस बात का एहसास हुआ है कि हमारी युवा पीड़ी गुरवाणी से अनजान है इस लिए उनके अंदर जिज्ञासा बनी रहती है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी हमें क्या कह रहे है उनके अंदर जाने की तीव्र अभिलाषा बनी रहती है।

वास्तव में यह पुस्तक गुरमति सिद्धांत का संग्रह है जो कि गुरसिक्खों का मार्ग दर्शन करती है जो कि प्रत्येक सिक्ख गुरमति सिद्धांत को सहिज रूप में तत्वज्ञान के रूप में प्राप्त कर सकेगा। जिस से वह जीवन में परिपक्व होकर समाज में विचरण कर सकेगा।

लेखकः जसबीर सिंह, मिशनरी

१ ओअंकार (ੴ) सतिगुर प्रसादि ॥

सत्य की परिभाषा

सचु ता परु जाणीऐ जा रिदै सचा होइ ॥
कूड़ की मलु उतरै तनु करे हछा धोइ ॥
सचु ता परु जाणीऐ जा सचि धरे पिआरु ॥
नाउ सुणि मनु रहसीऐ ता पाए मोख दुआरु ॥
सचु ता परु जाणीऐ जा जुगति जाणै जीउ ॥
धरति काइआ साध कै विचि देइ करता बीउ ॥
सचु ता परु जाणीऐ जा सिख सची लेइ ॥
दइआ जाणे जीअ की किछु पुंनु दानु करेइ ॥
सचु ताँ परु जाणीऐ जा आतम तीरथि करे निवासु ॥
सतिगुरू नो पुछि कै बहि रहै करे निवासु ॥
सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ ॥
नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ ॥

रागु आसा, महला-1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 468

१ ओअंकार (ੴ) सतिगुर प्रसादि ।।

1st-A जागति जोति जपै निस बासुर, एक बिना मन नैक न आनै।।
Team पूरन प्रेम प्रतीत सजै, ब्रत गोर मड़ही मट्ठ भूल न मानै।।

33 सवैइये पातशाही-10वीं

2nd-B नामा कहै तिलोचना मुख ते रामु संम्हालि ॥
Team हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजनु नालि ॥

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 1375

1st-A लालचु छोडहु अंधिहो लालचि दुखु भारी ॥
Team साचौ साहिबु मनि वसै हउमै बिखु मारी ॥

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 419

2nd-B रैणि गवाई सोइ कै दिवसु गवाइआ खाइ ॥
Team हीरे जैसा जनमु है कउडी बदले जाइ ॥

गौड़ी बेरागण म: 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 156

1st-A इसु जर कारणि घणी विगुती इनि जर घणी खुआई ॥
Team पापा बाझहु होवै नाही मुइआ साथि न जाई ॥

रागु आसा- श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 417

2nd-B एकै पाथर कीजै भाउ ॥ दूजै पाथर धरीऐ पाउ ॥
Team जे ओहु देउ त ओहु भी देवा ॥ कहि नामदेउ हम हरि की सेवा ॥

रागु गुजरी- श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 525

1st-A विणु गाहक गुण वेचीऐ तउ गुणु सहघो जाइ ॥
Team गुण का गाहकु जे मिलै तउ गुणु लाख विकाइ ॥

रागु मारू- श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 1086

2nd-B इकि पिरु रावहि आपणा हउ कै दरि पूछउ जाइ ॥
Team सतिगुरु सेवी भाउ करि मै पिरु देहु मिलाइ ॥

श्री रागु महला : 3 श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 38

1st-A इछा पूरकु सरब सुखदाता हरि जा कै वसि है कामधेना ॥
Team सो ऐसा हरि धिआईऐ मेरे जीअड़े ता सरब सुख पावहि मेरे मना ॥

धनासरी महला : 4- श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 669

2nd-B नैनहु नीरु बहै तनु खीना भए केस दुध वानी ॥
Team रूधा कंठु सबदु नही उचरै अब किआ करहि परानी ॥

रागु सोरठ - श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 659

1st-A निवणु सु अखरु खवणु गुणु जिहबा मणीआ मंतु ॥
Team ए त्रै भैणे वेस करि ताँ वसि आवी कंतु ॥

श्लोक फरीद जी - श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 1384

2nd-B तै साहिब की बात जि आखै कहु नानक किआ दीजै ॥
Team सीसु वढे करि बैसणु दीजै विणु सिर सेव करीजै ॥

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 558

1st-A जब लगु मनि बैकुंठ की आस ॥
Team तब लगु होइ नही चरन निवासु ॥

गउड़ी कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 325

2nd-B सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥
Team हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥

राग गउड़ी महला :5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग- 266

1st-A माइआ होई नागनी जगति रही लपटाइ ॥

Team इस की सेवा जो करे तिस ही कउ फिरि खाइ ॥

राग गुजरी महला : 3– श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 510

2nd-B इहु तनु सभो रतु है रतु बिनु तंनु न होइ ॥

Team जो सहि रते आपणै तिन तनि लोभ रतु न होइ ॥

रामकली महला : 3 श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 949

1st-A एको सिमरो नानका जो जलि थलि रहिआ समाइ।।

Team दूजा काहे सिमरीऐ जो जंमे ते मरि जाइ।।

जनम साखी

2nd-B एक ऊपरि जिसु जन की आसा ॥

Team तिस की कटीऐ जम की फासा ॥

रागु गउड़ी महला : 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 281

1st-A सेवा करत होइ निहकामी ॥

Team तिस कउ होत परापति सुआमी ॥

रागु गउड़ी महला : 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 286

2nd-B मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥

Team मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रंगु माणु ॥

रागु आसा महला : 3 श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 441

1st-A निरभउ जपै सगल भउ मिटै ॥

Team प्रभ किरपा ते प्राणी छुटै ॥

रागु गउड़ी महला : 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 293

2nd-B टहल करउ तेरे दास की पग झारउ बाल ॥

Team मसतकु अपना भेट देउ गुन सुनउ रसाल ॥

रागु बिलावल महला: 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 810

1st-A लाख अडंबर बहुतु बिसथारा ॥

Team नाम बिना झूठे पासारा ॥

गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 240

2nd-B लाख करोरी बंधु न परै ॥

Team हरि का नामु जपत निसतरै ॥

गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 264

1st-A रंगु माणि लै पिआरिआ जा जोबनु नउ हुला ॥

Team दिन थोड़ड़े थके भइआ पुराणा चोला ॥

श्री राग महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग– 23

2nd-B लोकु अवगणा की बंन्हे गंठड़ी गुण न विहाझै कोइ ॥

Team गुण का गाहकु नानका विरला कोई होइ ॥

रागु मारु महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1092

1st-A एको एकु रविआ सभ ठाई ॥

Team तिसु बिनु दूजा कोई नाही ॥

रागु मारु महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1080

2nd-B हमरी जाति पति सचु नाउ ॥

Team करम धरम संजमु सत भाउ ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 353

1st-A ओहु धनवंतु कुलवंतु पतिवंतु ॥

Team जीवन मुकति जिसु रिदै भगवंतु ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 294

2nd-B तीरथ नाइ न उतरसि मैलु ॥

Team करम धरम सभि हउमै फैलु ॥

रागु राम महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –890

1st-A लख चउरासीह जोनि सबाई ॥

Team माणस कउ प्रभि दीई वडिआई ॥

रागु मारु महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1075

2nd-B एकसु सिउ जा का मनु राता ॥

Team विसरी तिसै पराई ताता ॥

गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 189

1st-A तिसना अगनि जलै संसारा ॥

Team लोभु अभिमानु बहुतु अहंकारा ॥

रागु माझ महला : 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 120

2nd-B रुखी सुखी खाइ कै ठंढा पाणी पीउ ॥

Team फरीदा देखि पराई चोपड़ी ना तरसाए जीउ ॥

श्लोक फरीद जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1379

1st-A उपदेसु करे करि लोक दृड़ावै ॥

Team अपना कहिआ आपि न कमावै ॥

राम कली महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 887

2nd-B वडे वडे जो दीसहि लोग ॥

Team तिन कउ बिआपै चिंता रोग ॥

गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 188

1st-A गुरमखि रोम रोम हरि धिआवै।।

Team नानक गुरमुखि साचि समाइ ॥

राम कली महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 938

2nd-B विणु तुधु होरु जि मंगणा सिरि दुखा कै दुख ॥

Team देहि नामु संतोखीआ उतरै मन की भुख ॥

राम कली महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 958

1st-A खिन महि नीच कीट कउ राज ॥

Team पारब्रहम गरीब निवाज ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 277

2nd-B जिसु नीच कउ कोई न जानै ॥

Team नामु जपत उहु चहु कुंट मानै ॥

आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 386

1st-A ना हम हिंदू न मुसलमान ॥

Team अलह राम के पिंडु परान ॥

रागु भैरों महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1136

2nd-B नउ निधि अंमृतु प्रभ का नामु ॥

Team देही महि इस का बिस्रामु ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 293

1st-A मन इछे सुख माणदा किछु नाहि विसूरे ॥

Team सो प्रभु चिति न आवई विसटा के कीरे ॥

जैतसरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 707

2nd-B राजे सीह मुकदम कुते ॥

Team जाइ जगाइनि् बैठे सुते ॥

रागु मलहार महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –1288

1st-A तूं साझा साहिबु बापु हमारा ॥

Team नउ निधि तेरै अखुट भंडारा ॥

रागु माझ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 97

2nd-B राम पदारथु पाइ कै कबीरा गाँठि न खोल् ॥

Team नही पटणु नही पारखू नही गाहकु नही मोलु ॥

श्लोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1365

1st-A लंका सा कोटु समुंद सी खाई ॥

Team तिह रावन घर खबरि न पाई ॥

आसा कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 481

2nd-B एकम एकंकारु निराला ॥

Team अमरु अजोनी जाति न जाला ॥

बिलावल महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग– 838

1st-A लंका गढु सोने का भइआ ॥

Team मूरखु रावनु किआ ले गइआ ॥

रागु भैरों कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1158

2nd-B अवर उपदेसै आपि न करै ॥

Team आवत जावत जनमै मरै ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 269

1st-A रहित रहै सोई सिख मेरा।।

Team ओहु साहिब मैं उस का चेरा।।

रहित मरयादा

2nd-B रहित बिनां नहि सिख कहावै।।

Team रहित बिनां दर चोटा खावै।।

रहित मरयादा

1st-A विचि दुनीआ सेव कमाईऐ ॥

Team ता दरगह बैसणु पाईऐ ॥

ਸਿਰੀ ਰਾਗੁ ਮ: 1, श्री रागु महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 26

2nd-B अंमृतु कउरा बिखिआ मीठी ॥ साकत की बिधि नैनहु डीठी ॥

Team कूड़ि कपटि अहंकारि रीझाना ॥ नामु सुनत जनु बिछूअ डसाना ॥

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 892

1st-A नानक सतिगुरि भेटिऐ पूरी होवै जुगति ॥

Team हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति ॥

रागु गुजरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 522

2nd-B तूं साझा साहिबु बापु हमारा ॥

Team नउ निधि तेरै अखुट भंडारा ॥

रागु माझ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 97

1st-A रोग सोग मिटे प्रभ धिआए ॥

Team मन बाँछत पूरन फल पाए ॥

गौंड महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –866

2nd-B एक चित जिह एक छिन धिआइओ।।

Team काल फास के बीच न आइओ।।

दसम बाणी अंग - 36 पातिसाही 10 वीं

1st-A ऊचे मंदर सुंदर नारी ॥

Team राम नाम बिनु बाजी हारी ॥

रागु सोरठ रवीदास जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 659

2nd-B रैनि गई मत दिनु भी जाइ ॥

Team भवर गए बग बैठे आइ ॥

रागु सूही कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 792

1st-A इह जगि मीतु न देखिओ कोई ॥

Team सगल जगतु अपनै सुखि लागिओ दुख मै संगि न होई ॥

सोरठ महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 633

2nd-B इकना सिधि न बुधि न अकलि सर अखर का भेउ न लहंति ॥

Team नानक ते नर असलि खर जि बिनु गुण गरबु करंत ॥

श्लोक वारां ते वधीक महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1411

1st-A तुम्हि छडि कोई अवर न धयाओं।।

Team जो बर चहों सु तुम ते पाऊं ।।

पातिसाही 10 वीं

2nd-B ऊठत बैठत सोवत जागत इहु मनु तुझहि चितारै ॥

Team सूख दूख इसु मन की बिरथा तुझ ही आगै सारै ॥

बिलावल महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 820

1st-A राम जपउ जी ऐसे ऐसे ॥

Team धू प्रहिलाद जपिओ हरि जैसे ॥

गउड़ी कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 337

2nd-B सो सिखु सदा बंधपु है भाई जि गुर के भाणे विचि आवै ॥

Team आपणै भाणै जो चलै भाई विछुड़ि चोटा खावै ॥

सोरठ महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 601

1st-A विसरु नाही दातार आपणा नामु देहु ॥

Team गुण गावा दिनु राति नानक चाउ एहु ॥

सूही महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 762

2nd-B हरि जसु सुनहि न हरि गुन गावहि ॥

Team बातन ही असमानु गिरावहि ॥

गउड़ी चेती कबीर जी , श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 332

1st-A हरि सो हीरा छाडि कै करहि आन की आस ॥

Team ते नर दोजक जाहिगे सति भाखै रविदास ॥

कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग– 1377

2nd-B सिमृति बेद पुराण पुकारनि पोथीआ ॥

Team नाम बिना सभि कूड़ु गाली होछीआ ॥

सूही महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 761

1st-A अंतरि मैलु जे तीरथ नावै तिसु बैकुंठ न जानाँ ॥

Team लोक पतीणे कछू न होवै नाही रामु अयाना ॥

आसा कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –484

2nd-B नानक चिंता मति करहु चिंता तिस ही हेइ ॥

Team जल महि जंत उपाइअनु तिना भि रोजी देइ ॥

रामकली महला 2, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 955

1st-A इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥

Team इकन्ा हुकमि समाइ लए इकन्ा हुकमे करे विणासु ॥

आसा महला 2, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 463

2nd-B सतिगुर बाझहु अंधु गुबारु ॥

Team थिती वार सेवहि मुगध गवार ॥

बिलावल महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 843

1st-A रसना जपती तूही तूही ॥

Team मात गरभ तुम ही प्रतिपालक मृत मंडल इक तुही ॥

सारंग महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1215

2nd-B हरखु सोगु जा कै नही बैरी मीत समानि ॥

Team कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि॥

श्लोक गुरु तेग बहादुर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1427

1st-A नानक दुनीआ कीआँ वडिआईआँ अगी सेती जालि ॥

Team एनी जलीईं नामु विसारिआ इक न चलीआ नालि ॥

रागु मलहार महला 2, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1290

2nd-B लाज मरै जो नामु न लेवै ॥ नाम बिहून सुखी किउ सोवै ॥

Team हरि सिमरनु छाडि परम गति चाहै ॥ मूल बिना साखा कत आहै ॥

भैरउ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1148

1st-A हज काबै जाउ न तीरथ पूजा ॥

Team एको सेवी अवरु न दूजा॥

भैरउ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1136

2nd-B जह मात पिता सुत मीत न भाई ॥

Team मन ऊहा नामु तेरै संगि सहाई ॥

राग गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 264

1st-A इतु मारगि चले भाईअड़े गुरु कहै सु कार कमाइ जीउ ॥

Team तिआगें मन की मतड़ी विसारें दूजा भाउ जीउ ॥

सूही महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 763

2nd-B उसतति मन महि करि निरंकार ॥

Team करि मन मेरे सति बिउहार ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 281

1st-A रे मन ओट लेहु हरि नामा ॥

Team जा कै सिमरनि दुरमति नासै पावहि पदु निरबाना ॥

रागु रामकली महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 901

2nd-B नदरि उपठी जे करे सुलताना घाहु कराइदा ॥

Team दरि मंगनि भिख न पाइदा ॥

रागु आसी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –472

1st-A दारा मीत पूत सनबंधी सगरे धन सिउ लागे ॥

Team जब ही निरधन देखिओ नर कउ संगु छाडि सभ भागे ॥

सोरठ महला ९, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 633

2nd-B गिरह कुटंब महि सहजि समाधी ॥

Team नानक नामि रते से सचे बैरागी ॥

श्लोक महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1246

1st-A गृहु तजि बन खंड जाईऐ चुनि खाईऐ कंदा ॥

Team अजहु बिकार न छोडई पापी मनु मंदा ॥

बिलावल कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 855

2nd-B दुरमति मदु जो पीवते बिखली पति कमली ॥

Team राम रसाइणि जो रते नानक सच अमली ॥

आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 399

1st-A लाख अडंबर बहुतु बिसथारा ॥

Team नाम बिना झूठे पासारा ॥

गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 240

2nd-B राखा एकु हमारा सुआमी ॥

Team सगल घटा का अंतरजामी ॥

गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1136

1st-A महा अनंदु गुर सबदु वीचारि ॥

Team पृअ सिउ राती धन सोहागणि नारि ॥

आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 370

2nd-B रे नर इह साची जीअ धारि ॥

Team सगल जगतु है जैसे सुपना बिनसत लगत न बार ॥

सोरठ महला ९, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 633

1st-A रसना सचा सिमरीऐ मनु तनु निरमलु होइ ॥

Team मात पिता साक अगले तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥

श्री रागु महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 49

2nd-B इहु तनु ऐसा जैसे घास की टाटी ॥

Team जलि गइओ घासु रलि गइओ माटी ॥

सुही रवीदास जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 794

1st-A टूटे बंधन जासु के होआ साधू संगु ॥

Team जो राते रंग एक कै नानक गूड़ा रंगु ॥

श्लोक महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 252

2nd-B गुरमुखि अंतरि सहजु है मनु चड़िआ दसवै आकासि ॥

Team तिथै ऊंघ न भुख है हरि अंमृत नामु सुख वासु ॥

श्लोक महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1414

1st-A सतिगुर नो सभु को वेखदा जेता जगतु संसारु ॥

Team डिठै मुकति न होवई जिचरु सबदि न करे वीचारु ॥

श्लोक महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 594

2nd-B राज लीला राजन की रचना करिआ हुकमु अफारा ॥

Team सेज सोहनी चंदनु चोआ नरक घोर का दुआरा ॥

सोरठ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –641

1st-A राखा एकु हमारा सुआमी ॥

Team सगल घटा का अंतरजामी ॥

भैरउ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, अंग - 1136

2nd-B मनु न डिगै तनु काहे कउ डराइ ॥

Team चरन कमल चितु रहिओ समाइ ॥

भैरउ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, अंग - 1162

1st-A एक भी न देइ दस भी हिरि लेइ ॥

Team तउ मूड़ा कहु कहा करेइ ॥

गउड़ी सुखमनी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 268

2nd-B इह बिधि को बिउहारु बनिओ है जा सिउ नेहु लगाइओ ॥

Team अंत बार नानक बिनु हरि जी कोऊ कामि न आइओ ॥

सोरठ महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 634

1st-A उठु फरीदा उजू साजि सुबह निवाज गुजारि ॥

Team जो सिरु साँई ना निवै सो सिरु कपि उतारि ॥

श्लोक फरीद जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 138●

2nd-B रसु सुइना रसु रुपा कामणि रसु परमल की वासु ॥

Team रसु घोड़े रसु सेजा मंदर रसु मीठा रसु मासु ॥

श्री राग महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 15

1st-A सोच करै दिनसु अरु राति ॥

Team मन की मैलु न तन ते जाति ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 265

2nd-B तीरथ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु ॥

Team नानक निहफलु जात तिह जिउ कुंचर इसनानु ॥

शलोक महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 1428

1st-A नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥

Team नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥

श्री रागु महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 15

2nd-B सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत ॥

Team पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु ॥

शलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 1105

1st-A तीरथि भरमसि बिआधि न जावै ॥

Team नाम बिना कैसे सुखु पावै ॥

रामकली महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 905

2nd-B वडे वडे राजन अरु भूमन ता की तृसन न बूझी ॥

Team लपटि रहे माइआ रंग माते लोचन कछू न सूझी ॥

धनासरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 672

1st-A झूठै मानु कहा करै जगु सुपने जिउ जानु ॥

Team इन मै कछु तेरो नही नानक कहिओ बखानि ॥

सलोक महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 1428

2nd-B नावण चले तीरथी मनि खोटै तनि चोर ॥

Team इकु भाउ लथी नातिआ दुइ भा चड़ीअसु होर ॥

रागु सूही महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -789

1st-A रारा रसु निरस करि जानिआ ॥ होइ निरस सु रसु पहिचानिआ ॥

Team इह रस छाडे उह रसु आवा ॥ उह रसु पीआ इह रसु नही भावा ॥

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 342

2nd-B वैर विरोध मिटे तिह मन ते ॥

Team हरि कीरतनु गुरमुखि जो सुनते ॥

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 259

1st-A तृसना बिरले ही की बुझी हे ॥

Team कोटि जोरे लाख क्रोरे मनु न होरे ॥ परै परै ही कउ लुझी हे ॥

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 213

2nd-B पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥

Team दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥
चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 8

Website :

www.sikhworld.info

Email:

jasbirsikhworldinfo@gmail.com

नोटः – उपरोक्त वेब साइट में सम्पूर्ण श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी में से चोनिंदा तुक्के (दोहेओ) के रूप में संग्रह आप जी को मिलेगे, जोकि कथा वाचक तथा ग्रंथी सिंघों के लिए संजोई गई है।

उ + ऊ + ओ

ऊठत सुखीआ बैठत सुखीआ ॥
भउ नही लागै जाँ ऐसे बुझीआ ॥

भैरव महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 1136

ऊठत बैठत हरि गुण गावै दूखु दरदु भ्रमु भागा ॥
कहु नानक ता के पूर करंमा जा का गुर चरनी मनु लागा ॥

रागु सोरठ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 614

उदमु करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंचु ॥
धिआइदिआ तूं प्रभू मिलु नानक उतरी चिंत ॥

रागु गुजरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 522

ऊठत बैठत सोवत नाम ॥
कहु नानक जन कै सद काम ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 285

ऊतम संगति ऊतमु होवै ॥
गुण कउ धावै अवगण धोवै ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 414

ऊठत बैठत सोवत धिआईऐ ॥
मारगि चलत हरे हरि गाईऐ ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 386

उसतति निंदा दोऊ बिबरजित तजहु मानु अभिमाना ॥
लोहा कंचनु सम करि जानहि ते मूरति भगवाना ॥

रागु केदार जी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 1123

उसतति निंदिआ नाहि जिहि कंचन लोह समानि ॥
कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥

रागु सलोक महला ९, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 1427

उधरहि आपि तरै संसारु ॥
राम नाम जपि एकंकारु ॥

रागु गउड़ी गुआरेरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 185

उजलु कैहा चिलकणा घोटिम कालड़ी मसु ॥
धोतिआ जूठि न उतरै जे सउ धोवा तिसु ॥

रागु सूही महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 729

उठंदिआ बहंदिआ सवंदिआ सुखु सोइ ॥
नानक नामि सलाहिऐ मनु तनु सीतलु होइ ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 321

उदमु करहु वडभागीहो सिमरहु हरि हरि राइ ॥
नानक जिसु सिमरत सभ सुख होवहि दूखु दरदु भ्रमु जाइ ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 456

उरि धारै जो अंतरि नामु ॥
सरब मै पेखै भगवानु ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 274

उसतति करहि अनेक जन अंतु न पारावार ॥
नानक रचना प्रभि रची बहु बिधि अनिक प्रकार ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 275

ऊडे ऊडि आवै सै कोसा तिसु पाछै बचरे छरिआ ॥
तिन कवणु खलावै कवणु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ ॥

रागु गुजरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 10

ओथै सचे ही सचि निबड़ै चुणि वखि कढे जजमालिआ ॥
थाउ न पाइनि कूड़िआर मुह कालै दोजकि चालिआ ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 463

उसतति निंदा दोऊ तिआगै खोजै पदु निरबाना ॥
जन नानक इहु खेलु कठनु है किनहूं गुरमुखि जाना ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 219

ओइ बिखादी दोखीआ ते गुर ते हूटे ॥
हम छूटे अब उन्ा ते ओइ हम ते छूटे ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 400

उदमु करत आनदु भइआ सिमरत सुख सारु ॥
जपि जपि नामु गोबिंद का पूरन बीचारु ॥

राग बिलावल महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 815

ऊच अपार बेअंत सुआमी कउणु जाणै गुण तेरे ॥
गावते उधरहि सुणते उधरहि बिनसहि पाप घनेरे ॥

रागु बिलावल महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 802

उदमु करत मनु निरमलु होआ ॥
हरि मारगि चलत भ्रमु सगला खोइआ ॥

रागु माझ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 99

ओअंकारि एक धुनि एकै एकै रागु अलापै ॥
एका देसी एकु दिखावै एको रहिआ बिआपै ॥

रागु राम कली महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 885

उसतति करहु सदा प्रभ अपने जिनि पूरी कल राखी ॥
जीअ जंत सभि भए पवित्रा सतिगुर की सचु साखी ॥

रागु सोरठि 5 वां, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 622

आ + औ +

आसा मनसा सगल तिआगै जग ते रहै निरासा ॥
कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि तिह घटि ब्रहमु निवासा ॥

सोरठ महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 633

अंमृतु कउरा बिखिआ मीठी ॥ साकत की बिधि नैनहु डीठी ॥

रागु रामकली महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 892

आन रसा जेते तै चाखे ॥ निमख न तृसना तेरी लाथे ॥

रागु गउड़ी गुआरेरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 180

अकली साहिबु सेवीऐ अकली पाईऐ मानु ॥
अकली पड़ि कै बुझीऐ अकली कीचै दानु ॥

रागु सारंग महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1245

आपे पटी कलम आपि उपरि लेखु भि तूं ॥
ईको कहीऐ नानका दूजा काहे कू ॥

रागु मलार महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1291

अवतार न जानहि अंतु ॥
परमेसरु पारब्रहम बेअंतु ॥

रागु रामकली महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 894

आपि मुकतु मुकतु करै संसारु ॥
नानक तिसु जन कउ सदा नमसकारु ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 295

अंनु न खाहि देही दुखु दीजै ॥
बिनु गुर गिआन तृपति नही थीजै ॥

रागु रामकली महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 905

अउखी घड़ी न देखण देई अपना बिरदु समाले ॥
हाथ देइ राखै अपने कउ सासि सासि प्रतिपाले ॥

रागु धनासरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 682

अगै जाति न जोरु है अगै जीउ नवे ॥
जिन की लेखै पति पवै चंगे सेई केइ ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 469

आगै जाति रूपु न जाइ ॥
तेहा होवै जेहे करम कमाइ ॥

रागु आसा महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – **363**

अब तउ जाइ चढे सिंघासनि मिले है सारिंगपानी ॥
राम कबीरा एक भए है कोइ न सकै पछानी ॥

रागु रामकली कबीर जी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 969

अंनु न खाइआ सादु गवाइआ ॥
बहु दुखु पाइआ दूजा भाइआ ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 467

अपुने सेवक की आपे राखै आपे नामु जपावै ॥
जह जह काज किरति सेवक की तहा तहा उठि धावै ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 403

अलप अहार सुलप सी निंद्रा दया छिमा तन प्रीति ।।
सील संतोख सदा निर बाहिबो हैवबो त्रैगुण अतीति।।

दसम ग्रंथ श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अंग – 1344

अति सुंदर कुलीन चतुर मुखि ङिआनी धनवंत ॥
मिरतक कहीअहि नानका जिह प्रीति नही भगवंत ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 253

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥

रागु परभाती कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1349

आपस कउ जो जाणै नीचा ॥
सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –266

अपराधी दूणा निवै जो हंता मिरगाहि ॥
सीसि निवाइऐ किआ थीऐ जा रिदै कुसुधे जाहि ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 470

आपि बुझाए सोई बूझै ॥
जिसु आपि सुझाए तिसु सभु किछु सूझै ॥

रागु माझ महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 150

अवर जोनि तेरी पनिहारी ॥
इसु धरती महि तेरी सिकदारी ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 374

आपि कमाउ अवरा उपदेस ॥
राम नाम हिरदै परवेस ॥

रागु गउड़ी गुआरेरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 185

अंमृतु पीवहु सदा चिरु जीवहु हरि सिमरत अनद अनंता ॥
रंग तमासा पूरन आसा कबहि न बिआपै चिंता ॥

रागु गुजरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 496

आपु गवाईऐ ता सहु पाईऐ अउरु कैसी चतुराई ॥
सहु नदरि करि देखै सो दिनु लेखै कामणि नउ निधि पाई ॥

रागु तिलंग महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 722

अंतरि वसै न बाहरि जाइ ॥
अंमृतु छोडि काहे बिखु खाइ ॥

रागु सूही महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 728

अवरि काज तेरै कितै न काम ॥
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 12

अउगणी भरिआ सरीरु है किउ संतहु निरमलु होइ ॥
गुरमुखि गुण वेहाझीअहि मलु हउमै कढै धोइ ॥

रागु गाउड़ी वार महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 311

अहि करु करे सु अहि करु पाए कोई न पकड़ीऐ किसै थाइ ॥
हरि जीउ सोई करहि जि भगत तेरे जाचहि एहु तेरा बिरदु ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 406

अनिक तपसिआ करे अहंकार ॥
नरक सुरग फिरि फिरि अवतार ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 278

आपस कउ जो भला कहावै ॥
तिसहि भलाई निकटि न आवै ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 278

अजु न सुती कंत सिउ अंगु मुड़े मुड़ि जाइ ॥
जाइ पुछहु डोहागणी तुम किउ रैणि विहाइ ॥

सलोक फरीद जी, महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1379

आइओ सुनन पड़न कउ बाणी ॥
नामु विसारि लगहि अन लालचि बिरथा जनमु पराणी ॥

रागु सारंग महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 1219

अनिक भोग बिखिआ के करै ॥
नह तृपतावै खपि खपि मरै ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 279

अंमृतु साचा नामु है कहणा कछू न जाइ ॥
पीवत हू परवाणु भइआ पूरै सबदि समाइ ॥

रागु श्री महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 33

अंतरु मलि निरमलु नही कीना बाहरि भेख उदासी ॥
हिरदै कमलु घटि ब्रहमु न चीन्हा काहे भइआ संनिआसी ॥

रागु गुजरी भगत त्रिलोचन जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 525

आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ ॥
दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 463

ऐसा गिआनु जपहु मन मेरे ॥
होवहु चाकर साचे केरे ॥

राग सूही महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 728

अंडज जेरज उतभुज सेतज तेरे कीते जंता ॥
एकु पुरबु मै तेरा देखिआ तू सभना माहि रवंता ॥

रागु सोरठि महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 596

अब न भजसि भजसि कब भाई ॥
आवै अंतु न भजिआ जाई ॥

रागु भैरउ कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 1159

अंधा आगू जे थीऐ किउ पाधरु जाणै ॥
आपि मुसै मति होछीऐ किउ राहु पछाणै ॥

रागु सूही महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 767

अंमृतु पीवहु सदा चिरु जीवहु हरि सिमरत अनद अनंता ॥
रंग तमासा पूरन आसा कबहि न बिआपै चिंता ॥

रागु गुजरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 496

अवरि पंच हम एक जना किउ राखउ घर बारु मना ॥
मारहि लूटहि नीत नीत किसु आगै करी पुकार जना ॥

रागु गउड़ी चेती महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 155

अंतरु मैला बाहरु नित धोवै ॥
साची दरगहि अपनी पति खोवै॥

भैरउ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 1151

अंधे एहि न आखीअनि जिन मुखि लोइण नाहि ॥
अंधे सेई नानका खसमहु घुथे जाहि ॥

रागु रामकली वार महला 2, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 954

अंदरि तृसना बहुतु छादन भोजन की आसा ॥
बिरथा जनमु गवाइ न गिरही न उदासा ॥

रागु मांझ महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 140

आपे जाणै करे आपि आपे आणै रासि ॥
तिसै अगै नानका खलिइ कीचै अरदासि ॥

रागु मारू महला 2, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 1093

अंमृतु हरि का नामु है जितु पीतै तिख जाइ ॥
नानक गुरमुखि जिन् पीआ तिन् बहुड़ि न लागी आइ ॥

रागु मलार महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1283

अंति कालि जो लछमी सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥
सरप जोनि वलि वलि अउतरै ॥

रागु गुजरी त्रिलोचन जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 526

आसा मनसा सगल तिआगै जग ते रहै निरासा ॥
कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि तिह घटि ब्रहमु निवासा ॥

रागु सोरठ महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 633

अचरजु एकु सुनहु रे भाई गुरि ऐसी बूझ बुझाई ॥
लाहि परदा ठाकुरु जउ भेटिओ तउ बिसरी ताति पराई ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 215

अरबद नरबद धुंधूकारा ॥ धरणि न गगना हुकमु अपारा ॥

रागु मारू महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1035

अपनी माइआ आपि पसारी आपहि देखनहारा ॥
नाना रूपु धरे बहु रंगी सभ ते रहै निआरा ॥

रागु बिहागड़ा महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 537

अंमृता पृअ बचन तुहारे ॥ अति सुंदर मनमोहन पिआरे सभहू मधि निरारे ॥

रागु देवगंधारी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 534

अउखी घड़ी न देखण देई अपना बिरदु समाले ॥
हाथ देइ राखै अपने कउ सासि सासि प्रतिपाले ॥

रागु धनासरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 682

अंतरि होइ गिआन परगासु।।
उसु अस्थान का नही बिनासु ।।

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 276

आपस कउ करमवंतु कहावै ॥
जनमि मरै बहु जोनि भ्रमावै ॥

रागु गउड़ी सुखमनी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 278

अल्प अहार सुलप सी निंद्रा दया छिमा तन प्रीति।।
सील संतोष सदा निर वाहिबो हैवबो त्रेगुण अतित।।

दसम ग्रंथ

इ + ई + ए

इहु मनु करमा इहु मनु धरमा ॥
इहु मनु पंच ततु ते जनमा ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 415

इही तेरा अउसरु इह तेरी बार ॥
घट भीतरि तू देखु बिचारि ॥

रागु भैरउ कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1159

ए मन मत जाणहि हरि दूरि है सदा वेखु हदूरि ॥
सद सुणदा सद वेखदा सबदि रहिआ भरपूरि ॥

रागु आसा महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 429

इसु देही अंदरि पंच चोर वसहि कामु क्रोधु लोभु मोहु अहंकारा ॥
अंमृतु लूटहि मनमुख नही बूझहि कोइ न सुणै पूकारा ॥

रागु सोरठ महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 600

इसु जुग महि सोभा नाम की बिनु नावै सोभ न होइ ॥
इह माइआ की सोभा चारि दिहाड़े जादी बिलमु न होइ ॥

रागु आसा महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 429

इकि अंनु न खाहि मूरख तिना किआ कीजई ॥
तृसना होई बहुतु किवै न धीजई ॥

रागु मलार वार महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1285

इह नीसाणी साध की जिसु भेटत तरीऐ ॥
जमकंकरु नेड़ि न आवई फिरि बहुड़ि न मरीऐ ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 320

इको सतिगुरु जागता होरु जगु सूता मोहि पिआसि ॥
सतिगुरु सेवनि जागंनि से जो रते सचि नामि गुणतासि ॥

रागु वडहंस महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 592

इकि तपसी बन महि तपु करहि नित तीरथ वासा ॥
आपु न चीनहि तामसी काहे भए उदासा ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 418

इकि बिंदु जतन करि राखदे से जती कहावहि ॥
बिनु गुर सबद न छूटही भ्रमि आवहि जावहि ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 418

इहु जगतु ममता मुआ जीवण की बिधि नाहि ॥
गुर कै भाणै जो चलै ताँ जीवण पदवी पाहि ॥

रागु गुजरी महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 508

इहु मनु राजा लोभीआ लुभतउ लोभाई ॥
गुरमुखि लोभु निवारीऐ हरि सिउ बणि आई ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 419

ए मन जैसा सेवहि तैसा होवहि तेहे करम कमाइ ॥
आपि बीजि आपे ही खावणा कहणा किछू न जाइ ॥

रागु आसा महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 755

एक भगति भगवान जिह प्रानी कै नाहि मनि ॥
जैसे सूकर सुआन नानक मानो ताहि तनु ॥

रागु सलोक महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1428

एकु पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुर हाई ॥
सुणि मीता जीउ हमारा बलि बलि जासी हरि दरसनु देहु दिखाई ॥

रागु सोरठ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 611

ए मन मत जाणहि हरि दूरि है सदा वेखु हदूरि ॥
सद सुणदा सद वेखदा सबदि रहिआ भरपूरि ॥

रागु आसा महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 428

एक बूंद जल कारने चातृकु दुखु पावै ॥
प्रान गए सागरु मिलै फुनि कामि न आवै ॥

रागु बिलावल सधना जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 858

ए रसना तू अन रसि राचि रही तेरी पिआस न जाइ ॥
पिआस न जाइ होरतु कितै जिचरु हरि रसु पलै न पाइ ॥

रागु रामकली महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 921

एकस महि सभु जगतो वरतै विरला एकु पछाणै ॥
सबदि मरै ता सभु किछु सूझै अनदिनु एको जाणै ॥

रागु सारग महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – – 1234

इक तसबी इक माला धरही ।। एक कुरान पुरान ऊचरही ।।

दसम ग्रंथ, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 419

इकि गावत रहे मनि सादु न पाइ ॥ हउमै विचि गावहि बिरथा जाइ ॥

रागु गउड़ी महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 158

इकि कंद मूलु चुणि खाहि वण खंडि वासा ॥
इकि भगवा वेसु करि फिरहि जोगी संनिआसा ॥

रागु माझ महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –140

इंद्री जित पंच दोख ते रहत ॥
नानक कोटि मधे को ऐसा अपरस ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 274

इकि नचि नचि पूरहि ताल भगति न कीजई ॥
इकि अंनु न खाहि मूरख तिना किआ कीजई ॥

रागु वार महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1285

ए मन चंचला चतुराई किनै न पाइआ ॥
चतुराई न पाइआ किनै तू सुणि मंन मेरिआ ॥

रागु रामकली महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 918

इहु धनु करते का खेलु है कदे आवै कदे जाइ ॥
गिआनीआ का धनु नामु है सद ही रहै समाइ ॥

रागु वार मलार महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1282

इहु धनु अखुटु न निखुटै न जाइ ॥
पूरै सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥

रागु धनासरी महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 663

इक घड़ी न मिलते ता कलिजुगु होता ॥
हुणि कदि मिलीऐ पृअ तुधु भगवंता ॥

रागु माझ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 96

एह माइआ जितु हरि विसरै मोहु उपजै भाउ दूजा लाइआ ॥
कहै नानकु गुर परसादी जिना लिव लागी तिनी विचे माइआ पाइआ ॥

रागु रामकली महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –921

इहु माणस जनमु दुलंभु है नाम बिना बिरथा सभु जाए ॥
हुणि वतै हरि नामु न बीजिओ अगै भुखा किआ खाए ॥

रागु आसा महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 450

ए नेत्रहु मेरिहो हरि तुम महि जोति धरी हरि बिनु अवरु न देखहु कोई ॥
हरि बिनु अवरु न देखहु कोई नदरी हरि निहालिआ ॥

रागु रामकली महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 922

इनही के प्रसादि सु बिदिआ लई इन ही की क्रिपा सभ शत्रु मरे।।
इनही की क्रिपा के मजे हम हैं नही मोसो गरीब करोर पर ।।

पाः 10वीं सैवया –

स

साकत हरि रस सादु न जानिआ तिन अंतरि हउमै कंडा हे ॥
जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डंडा हे ॥

रागु गउड़ी पूरबी महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 171

सतिगुरु मेरा सदा सदा ना आवै न जाइ ॥
ओहु अबिनासी पुरखु है सभ महि रहिआ समाइ ॥

रागु सूही महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 758

साचे नाम की तिलु वडिआई ॥
आखि थके कीमति नही पाई ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 9

सो निहकरमी जो सबदु बीचारे ॥
अंतरि ततु गिआनि हउमै मारे ॥

रागु माझ महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –128

साचे नाम की लागै भूख ॥
उतु भूखै खाइ चलीअहि दूख ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 09

सतिगुर कउ बलि जाईऐ ॥
जितु मिलिऐ परम गति पाईऐ ॥

श्री रागु महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 71

सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जलंनि् ॥
नानक सतीआ जाणीअनि् जि बिरहे चोट मरंनि् ॥

रागु सूही महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 787

सो जीविआ जिसु मनि वसिआ सोइ ॥
नानक अवरु न जीवै कोइ ॥

रागु माझ महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 142

सूरज किरणि मिले जल का जलु हूआ राम ॥
जोती जोति रली संपूरनु थीआ राम ॥

रागु बिवालव महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 846

सलामु जबाबु दोवै करे मुंढहु घुथा जाइ ॥
नानक दोवै कूड़ीआ थाइ न काई पाइ ॥

रागु आसा महला 2, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –474

संत जना मिलि हरि जसु गाइओ ॥
कोटि जनम के दूख गवाइओ ॥

रागु बैराड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 720

सगल बनसपति महि बैसंतरु सगल दूध महि घीआ ॥
ऊच नीच महि जोति समाणी घटि घटि माधउ जीआ ॥

रागु सोरठि महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –617

सभो भजै आसरा चुकै सभु असराउ ॥
चिति आवै ओसु पारब्रहमु लगै न तती वाउ ॥

श्री रागु महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 70

सो संनिआसी जो सतिगुर सेवै विचहु आपु गवाए ॥
छादन भोजन की आस न करई अचिंतु मिलै सो पाए ॥

रागु मारू महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1012

सिव सिव करते जो नरु धिआवै ॥
बरद चढे डउरू ढमकावै ॥

रागु गौंड भगत नामदेव जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 874

सूख सहज आनदु घणा हरि कीरतनु गाउ ॥
गरह निवारे सतिगुरू दे अपणा नाउ ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 400

सो अंतरि सो बाहरि अनंत ॥
घटि घटि बिआपि रहिआ भगवंत ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –293

सोई दिवसु भला मेरे भाई ॥
हरि गुन गाइ परम गति पाई ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –395

सुंन समाधि अनहत तह नाद ॥
कहनु न जाई अचरज बिसमाद ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 293

से जन सचे निरमले जिन सतिगुर नालि पिआरु ॥
सतिगुर का भाणा कमावदे बिखु हउमै तजि विकारु ॥

रागु श्री राग महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –65

सूचे एहि न आखीअहि बहनि जि पिंडा धोइ ॥
सूचे सेई नानका जिन मनि वसिआ सोइ ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 472

सबदि मरै सो मरि रहै फिरि मरै न दूजी वार ॥
सबदै ही ते पाईऐ हरि नामे लगै पिआरु ॥

श्री राग महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 57

सबदि रते से निरमले तजि काम क्रोधु अहंकारु ॥
नामु सलाहनि सद सदा हरि राखहि उर धारि ॥

श्री रागु महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 57

सरगुन निरगुन निरंकार सुंन समाधी आपि ॥
आपन कीआ नानका आपे ही फिरि जापि ॥

रागु गउड़ी सुखमनी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –290

सतिगुर की ऐसी वडिआई ॥
पुत्र कलत्र विचे गति पाई ॥

रागु धनासरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 661

सुखु नाही बहु देस कमाए ॥ सरब सुखा हरि हरि गुण गाए ॥

रागु भैरउ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –1147

सभ किछु घर महि बाहरि नाही ॥ बाहरि टोलै सो भरमि भुलाही ॥

रागु माझ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 102

साकत माइआ कउ बहु धावहि ॥
नामु विसारि कहा सुखु पावहि ॥

ਰਾਗੁ ਮਾਰੂ ਮ: 1 – रागु मारू महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –1029

सेवक कउ सेवा बनि आई ॥
हुकमु बूझि परम पदु पाई ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 292

सोई कराइ जो तुधु भावै ॥
मोहि सिआणप कछू न आवै ॥

रागु सोरठि महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 626

सुनि सखीए प्रभ मिलण नीसानी ॥
मनु तनु अरपि तजि लाज लोकानी ॥

रागु सूही महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 737

सति पुरखु जिनि जानिआ सतिगुरु तिस का नाउ ॥
तिस कै संगि सिखु उधरै नानक हरि गुन गाउ ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –286

सोई बिधाता खिनु खिनु जपीऐ ॥
जिसु सिमरत अवगुण सभि ढकीऐ ॥

रागु मारू महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1004

सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत ॥
पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु ॥

रागु मारू कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1105

सील संजमि पृअ आगिआ मानै ॥
तिसु नारी कउ दुखु न जमानै ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 185

से वडभागी जिन् नामु धिआइआ ॥
सदा गुणदाता मंनि वसाइआ॥

रागु आसा महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 361

सो कुलवंता जि सिमरै सुआमी ॥ सो पतिवंता जि आपु पछानी ॥

रागु भैरउ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1149

सगले करम धरम जुग सोधे ॥
बिनु नावै इहु मनु न प्रबोधे ॥

रागु रामकली महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 913

सतिगुरु जिनी न सेविओ सबदि न कीतो वीचारु ॥
अंतरि गिआनु न आइओ मिरतकु है संसारि ॥

श्री रागु महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 88

सिधा के आसण जे सिखै इंद्री वसि करि कमाइ ॥
मन की मैलु न उतरै हउमै मैलु न जाइ ॥

रागु वडहंस महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –558

साचि नामि मेरा मनु लागा ॥
लोगन सिउ मेरा ठाठा बागा ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –384

सभु जगु काजल कोठड़ी तनु मनु देह सुआहि ॥
गुरि राखे से निरमले सबदि निवारी भाहि ॥

श्री रागु महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –64

सबदि रते से निरमले हउ सद बलिहारै जासु ॥
हिरदै जिन कै हरि वसै तितु घटि है परगासु ॥

श्री रागु महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –27

साजनु बंधु सुमित्र सो हरि नामु हिरदै देइ ॥
अउगण सभ मिटाइ कै परउपकारु करेइ ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –218

सजण सेई नालि मै चलदिआ नालि चलंनि ॥
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै खड़े दिसंनि ॥

रागु सूही महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –729

सो मुनि जि मन की दुबिधा मारे ॥
दुबिधा मारि ब्रहमु बीचारे ॥

रागु भैरउ महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –1128

सुतु अपराध करत है जेते ॥ जननी चीति न राखसि तेते ॥

रागु आसा भगत कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –478

सूरज किरणि मिले जल का जलु हूआ राम ॥
जोती जोति रली संपूरनु थीआ राम ॥

रागु बिलावल महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 846

सभना साहुरै वंञणा सभि मुकलावणहार ॥
नानक धंनु सोहागणी जिन सह नालि पिआरु ॥

श्री रागु महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 50

सो जनु साचा जि हउमै मारै ॥
गुर कै सबदि पंच संघारै ॥

रागु गउड़ी महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –230

सुंनति कीए तुरकु जे होइगा अउरत का किआ करीऐ ॥
अरध सरीरी नारि न छोडै ता ते हिंदू ही रहीऐ ॥

रागु आसा भगत कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –477

साँती विचि कार कमावणी सा खसमु पाए थाइ ॥
नानक कामि क्रोधि किनै न पाइओ पुछहु गिआनी जाइ ॥

रागु बिहागड़ा महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –551

सुआमी को गृहु जिउ सदा सुआन तजत नही नित ॥
नानक इह बिधि हरि भजउ इक मनि हुइ इकि चिति ॥

सलोक गुरु तेग बहादुर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1428

साकत नरि सबद सुरति किउ पाईऐ ॥
सबदु सुरति बिनु आईऐ जाईऐ ॥

रागु मारू महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –1041

सूहा वेसु सभु उतारि धरे गलि पहिरै खिमा सीगारु ॥
पेईऐ साहुरै बहु सोभा पाए तिसु पूज करे सभु सैसारु ॥

रागु सूही महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 786

संता कउ मति कोई निंदहु संत रामु है एको ॥
कहु कबीर मै सो गुरु पाइआ जा का नाउ बिबेको ॥

रागु सूही ललित कबीर जीउ, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –793

कबीर संतु न छाडै संतई जउ कोटिक मिलहि असंत ॥
मलिआगरु भुयंगम बेढिओ त सीतलता न तजंत ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1373

सरब जोति महि जा की जोति ॥
धारि रहिओ सुआमी ओति पोति ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 293

सतिगुर की महिमा सतिगुरु जाणै ॥
जो किछु करे सु आपण भाणै ॥

रागु मारू महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1074

सो अंतरि सो बाहरि अनंत ॥
घटि घटि बिआपि रहिआ भगवंत ॥

रागु गउड़ी सुखमनी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -292

सरब सोइन की लंका होती रावन से अधिकाई ॥
कहा भइओ दरि बाँधे हाथी खिन महि भई पराई ॥

रागु धनासरी नामदेव जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 693

सुरग मुकति बैकुंठ सभि बाँछहि निति आसा आस करीजै ॥
हरि दरसन के जन मुकति न माँगहि मिलि दरसन तृपति मनु धीजै ॥

रागु कलीआन महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1324

सतसंगति कैसी जाणीऐ ॥
जिथै एको नामु वखाणीऐ ॥

रागु श्री महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -71

सबदु बीचारि भए निरंकारी ॥
गुरमति जागे दुरमति परहारी ॥

रागु रामकली महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -903

संसारु रोगी नामु दारू मैलु लागै सच बिना ॥
गुर वाकु निरमलु सदा चानणु नित साचु तीरथु मजना ॥

रागु धनासरी महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -687

ह

हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥
गुरु पीरु हामा ता भरे जा मुरदारु न खाइ ॥

रागु माझ महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -141

हमरा झगरा रहा न कोऊ ॥ पंडित मुलाँ छाडे दोऊ ॥

रागु भैरउ भगत कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1158

हम मैले तुम ऊजल करते हम निरगुन तू दाता ॥
हम मूरख तुम चतुर सिआणे तू सरब कला का गिआता ॥

रागु सोरठि महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -613

हरि का नामु रिदै नित धिआई ॥
संगी साथी सगल तराँई ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -394

हरि बिनु सभु किछु मैला संतहु किआ हउ पूज चड़ाई ॥
हरि साचे भावै सा पूजा होवै भाणा मनि वसाई ॥

रागु रामकली महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -910

हिंदू अंन्ना तुरकू काणा ॥
दुहाँ ते गिआनी सिआणा ॥

रागु बिलावल गौंड भगत नामदेव जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -874

हिंदू पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीति ॥
नामे सोई सेविआ जह देहुरा न मसीति ॥

रागु बिलावल गौंड भगत नामदेव जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -874

हरि जीउ तेरी दाती राजा ॥
माणसु बपुड़ा किआ सालाही किआ तिस का मुहताजा ॥

रागु सोरठि महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 608

हिंदू तुरक का साहिबु एक ॥
कह करै मुलाँ कह करै सेख ॥

रागु भैरउ भगत कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1158

हरि बिनु कछू न लागई भगतन कउ मीठा ॥
आन सुआद सभि फीकिआ करि निरनउ डीठा ॥

रागु जैतसरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 708

हरि का नामु अंमृत जलु निरमलु इहु अउखधु जगि सारा ॥
गुर परसादि कहै जनु भीखनु पावउ मोख दुआरा ॥

रागु सोरठि भगत भीखन जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 659

हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि ॥
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि ॥

रागु आसा महला 2, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 466

हम देखत जिनि सभु जगु लूटिआ ॥
कहु कबीर मै राम कहि छूटिआ ॥

रागु गउड़ी भगत कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 329

हरि बिसरत सो मूआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
नामु धिआवै सरब फल पावै सो जनु सुखीआ हूआ ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 407

हरि जू राखि लेहु पति मेरी ॥
जम को त्रास भइओ उर अंतरि सरनि गही किरपा निधि तेरी ॥

रागु जैतसरी महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –703

हरि की भगति रते बैरागी चूके मोह पिआसा ॥
नानक हउमै मारि पतीणे विरले दास उदासा ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 437

हरि बिनु होर रासि कूड़ी है चलदिआ नालि न जाई ॥
हरि मेरा धनु मेरै साथि चालै जहा हउ जाउ तह जाई ॥

रागु गूजरी महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 490

हम रुलते फिरते कोई बात न पूछता गुर सतिगुर संगि कीरे हम थापे ॥
धंनु धंनु गुरू नानक जन केरा जितु मिलिऐ चूके सभि सोग संतापे ॥

रागु गउड़ी बैरागन महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –167

हम आदमी हाँ इक दमी मुहलति मुहतु न जाणा ॥
नानकु बिनवै तिसै सरेवहु जा के जीअ पराणा ॥

रागु धनासरी महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 660

हउ तिस घोलि घुमाइआ पर नारी दे नोड़ न जावै।।
हउ तिस घोलि घुमाइआ पर दरबै नो हथु न लावै।।

भाई गुरदास जार – 12

हम नही चंगे बुरा नही कोइ ॥
प्रणवति नानकु तारे सोइ ॥

रागु सूही महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 728

हरि भगति हरि का पिआरु है जे गुरमुखि करे बीचारु ॥
पाखंडि भगति न होवई दुबिधा बोलु खुआरु ॥

रागु श्री राग महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –28

हंसा वेखि तरंदिआ बगाँ भि आया चाउ ॥
डुबि मुए बग बपुड़े सिरु तलि उपरि पाउ ॥

रागु वडहंसकी महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 585

हरि है खाँडु रेतु महि बिखरी हाथी चुनी न जाइ ॥
कहि कबीर गुरि भली बुझाई कीटी होइ कै खाइ ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1377

हरि का सेवकु सो हरि जेहा ॥
भेदु न जाणहु माणस देहा ॥

रागु मारू महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1075

हरि हरि करहि नित कपटु कमावहि हिरदा सुधु न होई ॥
अनदिनु करम करहि बहुतेरे सुपनै सुखु न होई ॥

रागु सूही महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 732

हरि इको दाता मंगीऐ मन चिंदिआ पाईऐ ॥
जे दूजे पासहु मंगीऐ ता लाज मराईऐ ॥

रागु वडहंस महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 590

हरि कीआ कथा कहाणीआ गुरि मीति सुणाईआ ॥
बलिहारी गुर आपणे गुर कउ बलि जाईआ ॥

रागु तिलंग महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 725

हरि सिमरत तेरी जाइ बलाइ ॥
सरब कलिआण वसै मनि आइ ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 193

हठु करि मरै न लेखै पावै ॥
वेस करै बहु भसम लगावै ॥

रागु गउड़ी महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 226

हरि रसु पीवत सद ही राता ॥ आन रसा खिन महि लहि जाता ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 377

हरि की भगति रते बैरागी चूके मोह पिआसा ॥
नानक हउमै मारि पतीणे विरले दास उदासा ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 437

हउमै नावै नालि विरोधु है दुइ न वसहि इक ठाइ ॥
हउमै विचि सेवा न होवई ता मनु बिरथा जाइ ॥

रागु वडहंस महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –560

हउमै जाई ता कंत समाई ॥
तउ कामणि पिआरे नव निधि पाई ॥

रागु सूही महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –750

हउमै मारि बजर कपाट खुलाइआ ॥
नामु अमोलकु गुर परसादी पाइआ ॥

रागु माझ महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –124

हरि की गति नहि कोउ जानै ॥
जोगी जती तपी पचि हारे अरु बहु लोग सिआने ॥

रागु बिहागड़ा महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 537

हरि जनु राम नाम गुन गावै ॥
जे कोई निंद करे हरि जन की अपुना गुनु न गवावै ॥

रागु बैराड़ी महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 719

हउमै विचि जाग्रणु न होवई हरि भगति न पवई थाइ ॥
मनमुख दरि ढोई ना लहहि भाइ दूजै करम कमाइ ॥

रागु प्रभाती महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1346

हउ खिनु पलु रहि न सकउ बिनु प्रीतम जिउ
बिनु अमलै अमली मरि गईआ ॥
जिन कउ पिआस होइ प्रभ केरी तिन् अवरु न
भावै बिनु हरि को दुईआ ॥

रागु बिलावलु महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –836

क

कबीर साकत संगु न कीजीऐ दूरहि जाईऐ भागि ॥
बासनु कारो परसीऐ तउ कछु लागै दागु ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1371

कुआर कंनिआ जैसे करत सीगारा ॥
किउ रलीआ मानै बाझु भतारा ॥

रागु सूही कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 792

कोऊ हरि समानि नही राजा ॥
ए भूपति सभ दिवस चारि के झूठे करत दिवाजा ॥

रागु बिलावल कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 856

काम क्रोध मोह बसि प्रानी हरि मूरति बिसराई ॥
झूठा तनु साचा करि मानिओ जिउ सुपना रैनाई ॥

रागु गउड़ी महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –219

करि इसनानु सिमरि प्रभु अपना मन तन भए अरोगा ॥
कोटि बिघन लाथे प्रभ सरणा प्रगटे भले संजोगा ॥

रागु सोरठि महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 611

कामु क्रोधु काइआ कउ गालै ॥
जिउ कंचन सोहागा ढालै ॥

रागु रामकली महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 932

करम धरम पाखंड जो दीसहि तिन जमु जागाती लूटै ॥
निरबाण कीरतनु गावहु करते का निमख सिमरत जितु छूटै ॥

रागु सूही महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 747

किआ हंसु किआ बगुला जा कउ नदरि करेइ ॥
जो तिसु भावै नानका कागहु हंसु करेइ ॥

श्री रागु महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 91

कउन वडा माइआ वडिआई ॥
सो वडा जिनि राम लिव लाई ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 88

कलि ताती ठाँढा हरि नाउ ॥
सिमरि सिमरि सदा सुख पाउ ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 288

काँइ रे बकबादु लाइओ ॥
जिनि हरि पाइओ तिनहि छपाइओ ॥

रागु राग टोडी नामदेउ जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 718

कंचन सिउ पाईऐ नही तोलि ॥
मनु दे रामु लीआ है मोलि ॥

रागु राग गउड़ी कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 327

कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ ॥
कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ ॥

रागु माझ महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –145

करन न सुनै काहू की निंदा ॥
सभ ते जानै आपस कउ मंदा ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –274

कहि कबीर निरधनु है सोई ॥
जा के हिरदै नामु न होई ॥

रागु भैरउ कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1159

कोटि बिघन तिसु लागते जिस नो विसरै नाउ ॥
नानक अनदिनु बिलपते जिउ सुंञै घरि काउ ॥

रागु गुजरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 522

कुबुधि डूमणी कुदइआ कसाइणि पर निंदा घट चूहड़ी मुठी क्रोधि चंडालि ॥
कारी कढी किआ थीऐ जाँ चारे बैठीआ नालि ॥

श्री रागु सलोक महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 91

काँइआ नगरि इकु बालकु वसिआ खिनु पलु थिरु न रहाई ॥
अनिक उपाव जतन करि थाके बारं बार भरमाई ॥

रागु बसंत हंडोल महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1191

काहे पूत झगरत हउ संगि बाप ॥
जिन के जणे बडीरे तुम हउ तिन सिउ झगरत पाप ॥

रागु सारग महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1200

काहे रे बन खोजन जाई ॥
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥

रागु धनासरी महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 684

कूड़ु कुसतु कमावदे पर निंदा सदा करेनि ॥
ओइ आपि डुबे पर निंदका सगले कुल डोबेनि ॥

रागु रामकली महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –951

कोई निंदकु होवै सतिगुरू का फिरि सरणि गुर आवै ॥
पिछले गुनह सतिगुरु बखसि लए सतसंगति नालि रलावै ॥

रागु बिलावल महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 854

करि किरपा जिस कै हिरदै गरीबी बसावै ॥
नानक ईहा मुकतु आगै सुखु पावै ॥

रागु गउड़ी सुखमनी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 278

करम करत होवै निहकरम ॥ तिसु बैसनो का निरमल धरम ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 274

किआ जाणा किव मरहगे कैसा मरणा होइ ॥
जे करि साहिबु मनहु न वीसरै ता सहिला मरणा होइ ॥

रागु बिहागड़ा महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 555

किआ जपु किआ तपु किआ ब्रत पूजा ॥
जा कै रिदै भाउ है दूजा ॥

रागु गउड़ी कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –324

काइआ अंदरि सभु किछु वसै खंड मंडल पाताला ॥
काइआ अंदरि जगजीवन दाता वसै सभना करे प्रतिपाला ॥

रागु सूही महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 754

करण कारण प्रभु एकु है दूसर नाही कोइ ॥
नानक तिसु बलिहारणै जलि थलि महीअलि सोइ ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 276

कवनु नरकु किआ सुरगु बिचारा संतन दोऊ रादे ॥
हम काहू की काणि न कढते अपने गुर परसादे ॥

रागु रामकली कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 969

कामणि तउ सीगारु करि जा पहिलाँ कंतु मनाइ ॥
मतु सेजै कंतु न आवई एवै बिरथा जाइ ॥

रागु वार सूही महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 788

किरपा करहु दीन के दाते मेरा गुणु अवगणु न बीचारहु कोई ॥
माटी का किआ धोपै सुआमी माणस की गति एही ॥

रागु रामकली महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 882

कनिक कामिनी हैवर गैवर बहु बिधि दानु दातारा ॥
अंन बसत्र भूमि बहु अरपे नह मिलीऐ हरि दुआरा ॥

रागु सोरठ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 641

कहु पंडित सूचा कवनु ठाउ ॥ जहाँ बैसि हउ भोजनु खाउ ॥

रागु बसंत कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1195

कोटि तीरथ मजन इसनाना इसु कलि महि मैलु भरीजै ॥
साधसंगि जो हरि गुण गावै सो निरमलु करि लीजै ॥

रागु सूही महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 747

कामि क्रोध हंकार लोभ हठ न मन सिउ लयावें।।
तब ही आतम तत को दरसे परम पुरख कह पावै।।

रागु दसम ग्रंथ बाणी –

कहत कबीर सुनहु रे प्रानी छोडहु मन के भरमा ॥
केवल नामु जपहु रे प्रानी परहु एक की सरनाँ ॥

रागु धनासरी कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 692

कहु रे पंडित बामन कब के होए ॥
बामन कहि कहि जनमु मत खोए ॥

रागु गउड़ी कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –324

कवणु सु अखरु कवणु गुणु कवणु सु मणीआ मंतु ॥
कवणु सु वेसो हउ करी जितु वसि आवै कंतु ॥

रागु गोंड फरीद जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1384

कहु नानक प्रभि इहै जनाई ॥
बिनु गुर मुकति न पाईऐ भाई ॥

रागु गोंड महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 864

करम धरम जुगति बहु करता करणैहारु न जानै ॥
उपदेसु करै आपि न कमावै ततु सबदु न पछानै ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –379

कबीर सतिगुर सूरमे बाहिआ बानु जु एकु ॥
लागत ही भुइ गिरि परिआ परा करेजे छेकु ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –1374

कबीर सभ ते हम बुरे हम तजि भलो सभु कोइ ॥
जिनि ऐसा करि बूझिआ मीतु हमारा सोइ ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1364

कंनी सूतकु कंनि पै लाइतबारी खाहि ॥
नानक हंसा आदमी बधे जम पुरि जाहि ॥

वार आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 472

कबीर सेवा कउ दुइ भले एकु संतु इकु रामु ॥
रामु जु दाता मुकति को संतु जपावै नामु ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1373

कबीरा मरता मरता जगु मुआ मरि भि न जानै कोइ ॥
ऐसी मरनी जो मरै बहुरि न मरना होइ ॥

बिहागड़ा सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 555

कबीरा जहा गिआनु तह धरमु है जहा झूठु तह पापु ॥
जहा लोभु तह कालु है जहा खिमा तह आपि ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –1372

कबीर मनु निरमलु भइआ जैसा गंगा नीरु ॥
पाछै लागो हरि फिरै कहत कबीर कबीर ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1367

कबीर बामनु गुरू है जगत का भगतन का गुरु नाहि ॥
अरझि उरझि कै पचि मूआ चारउ बेदहु माहि ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –1377

कबीर साचा सतिगुरु किआ करै जउ सिखा महि चूक ॥
अंधे एक न लागई जिउ बाँसु बजाईऐ फूक ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1372

कबीर तूं तूं करता तू हूआ मुझ महि रहा न हूं ॥
जब आपा पर का मिटि गइआ जत देखउ तत तू ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1375

कबीर लूटना है त लूटि लै राम नाम है लूटि ॥
फिरि पाछै पछुताहुगे प्रान जाहिंगे छूटि ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1366

कबीर कसउटी राम की झूठा टिकै न कोइ ॥
राम कसउटी सो सहै जो मरजीवा होइ ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 948

कबीर मानस जनमु दुलंभु है होइ न बारै बार ॥
जिउ बन फल पाके भुइ गिरहि बहुरि न लागहि डार ॥

सलोक कबीर जी-30, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1366

कबीर जपनी काठ की किआ दिखलावहि लोइ ॥
हिरदै रामु न चेतही इह जपनी किआ होइ ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1368

कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै अहोई राखै नारि ॥
गदही होइ कै अउतरै भारु सहै मन चारि ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –1370

कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै राति जगावन जाइ ॥
सरपनि होइ कै अउतरै जाए अपुने खाइ ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1370

कबीर एक घड़ी आधी घरी आधी हूं ते आध ॥
भगतन सेती गोसटे जो कीने सो लाभ ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1377

कबीर साकत ते सूकर भला राखै आछा गाउ ॥
उहु साकतु बपुरा मरि गइआ कोइ न लैहै नाउ ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1372

कबीर गरबु न कीजीऐ देही देखि सुरंग ॥
आजु कालि तजि जाहुगे जिउ काँचुरी भुयंग ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1366

कबीर गरबु न कीजीऐ रंकु न हसीऐ कोइ ॥
अजहु सु नाउ समुंद्र महि किआ जानउ किआ होइ ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1366

कबीर बाँसु बडाई बूडिआ इउ मत डूबहु कोइ ॥
चंदन कै निकटे बसै बाँसु सुगंधु न होइ ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1365

कबीर अवरह कउ उपदेसते मुख मै परि है रेतु ॥
रासि बिरानी राखते खाया घर का खेतु ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1369

कबीर बैसनउ की कूकरि भली साकत की बुरी माइ ॥
ओह नित सुनै हरि नाम जसु उह पाप बिसाहन जाइ ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1367

कबीर सुरग नरक ते मै रहिओ सतिगुर के परसादि ॥
चरन कमल की मउज महि रहउ अंति अरु आदि ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1370

कबीर सूता किआ करहि बैठा रहु अरु जागु ॥
जा के संग ते बीछुरा ता ही के संगि लागु ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1371

कबीर माइआ तजी त किआ भइआ जउ मानु तजिआ नही जाइ ॥
मान मुनी मुनिवर गले मानु सभै कउ खाइ ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1372

कबीर गंगा तीर जु घरु करहि पीवहि निरमल नीरु ॥
बिनु हरि भगति न मुकति होइ इउ कहि रमे कबीर ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1367

कबीर मेरी सिमरनी रसना ऊपरि रामु ॥
आदि जुगादी सगल भगत ता को सुखु बिस्रामु ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1364

कबीर माटी के हम पूतरे मानसु राखिओ नाउ ॥
चारि दिवस के पाहुने बड बड रूंधहि ठाउ ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1367

कवणु सु अखरु कवणु गुणु कवणु सु मणीआ मंतु ॥
कवणु सु वेसो हउ करी जितु वसि आवै कंतु ॥

सलोक फरीद जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1384

करता तू मेरा जजमानु ॥
इक दखिणा हउ तै पहि मागउ देहि आपणा नामु ॥

रागु प्रभाती महला-1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1329

ख

खावहि खरचहि रलि मिलि भाई ॥
तोटि न आवै वधदो जाई ॥

रागु गउड़ी गुआरेरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 186

खाणा पीणा हसणा सउणा विसरि गइआ है मरणा ॥
खसमु विसारि खुआरी कीनी ध्रिगु जीवणु नही रहणा ॥

रागु मलार महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1254

खसमु विसारि कीए रस भोग ॥
ताँ तनि उठि खलोए रोग ॥

रागु मलार महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1256

खत्री ब्राहमण सूद वैस उपदेसु चहु वरना कउ साझा ॥
गुरमुखि नामु जपै उधरै सो कलि महि घटि घटि नानक माझा ॥

रागु सूही महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 747

खेम कुसल सहज आनंद ॥
साधसंगि भजु परमानंद ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 295

खाँदिआ खाँदिआ मुहु घठा पैनंदिआ सभु अंगु ॥
नानक ध्रिगु तिना दा जीविआ जिन सचि न लगो रंगु ॥

रागु गुजरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 523

खिमा विहूणे खपि गए खूहणि लख असंख ॥
गणत न आवै किउ गणी खपि खपि मुए बिसंख ॥

रागु रामकली महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 937

खालसा अकाल पुरख की फौज।।
खालसा परगटिओ परमातम की मौज।।

सरब लोह ग्रंथ

खात पीत खेलत हसत भरमे जनम अनेक ॥
भवजल ते काढहु प्रभू नानक तेरी टेक ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 261

खसमु विसारहि ते कमजाति ॥
नानक नावै बाझु सनाति ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 10

खुदी मिटी तब सुख भए मन तन भए अरोग ॥
नानक दृसटी आइआ उसतति करनै जोगु ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 260

खत्री सो जु करमा का सूरु ॥ पुंन दान का करै सरीरु ॥

सलोक महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1411

खेतु पछाणै बीजै दानु ॥ सो खत्री दरगह परवाणु ॥

सलोक महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1411

खोटे खरे तुधु आपि उपाए ॥ तुधु आपे परखै लोक सबाए ॥

रागु माझ महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 119

खोटे कउ खरा कहै खरे सार न जाणै ॥
अंधे का नाउ पारखू कली काल विडाणै ॥

रागु गउड़ी महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 229

खत्री ब्रहामणु सूदु बैसु उधरै सिमरि चंडाल ॥
जिनि जानिओ प्रभु आपना नानक तिसहि रवाल ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 300

खालसा मेरो रूप है खास ।।
खालसे महि हउ करउ निवास ।।

सरब लोह, ग्रंथ

खाणा पीणा हसणा बादि ॥
जब लगु रिदै न आवहि यादि ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 351

खोजत खोजत ततु बीचारिओ दास गोविंद पराइण ॥
अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण ॥

रागु टोडी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 714

ग

गुरबाणी सद मीठी लागी पाप विकार गवाइआ ॥
हउमै रोगु गइआ भउ भागा सहजे सहजि मिलाइआ ॥

रागु सूही महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 773

गुण कामण करि कंतु रीझाइआ ॥
वसि करि लीना गुरि भरमु चुकाइआ ॥

रागु सूही महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 737

गुण विचारे गिआनी सोइ ॥ गुण महि गिआनु परापति होइ ॥

रागु रामकली महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 931

गलीं असी चंगीआ आचारी बुरीआह ॥
मनहु कुसुधा कालीआ बाहरि चिटवीआह ॥

रागु श्री राग महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 85

गिआनु धिआनु किछु करमु न जाणा सार न जाणा तेरी ॥
सभ ते वडा सतिगुरु नानकु जिनि कल राखी मेरी ॥

रागु जैत महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 750

गुर परसादी को सचु कमावै ॥
नानक सो तपा मोखंतरु पावै ॥

रागु रामकली महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 948

गुर साखी अंतरि जागी ॥ ता चंचल मति तिआगी ॥

रागु सोरठ महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 599

गुर साखी का उजीआरा ॥ ता मिटिआ सगल अंधारा ॥

रागु सोरठ महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 599

गलि माला तिलकु लिलाटं ॥ दुइ धोती बसत्र कपाटं ॥

आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 470

जे जाणसि ब्रहमं करमं ॥ सभि फोकट निसचउ करमं ॥

आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 470

गरभ वास महि कुलु नही जाती ॥
ब्रहम बिंदु ते सभ उतपाती ॥

रागु गउड़ी कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 324

गज साढे तै तै धोतीआ तिहरे पाइनि तग ॥
गली जिन्ा जपमालीआ लोटे हथि निबग ॥

रागु आस कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 476

इस देही कउ सिमरहि देव ॥ सो देही भजु हरि की सेव ॥

रागु भैरउ कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1159

गुरु पीरु सदाए मंगण जाइ ॥ ता कै मूलि न लगीऐ पाइ ॥

रागु सारग महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1245

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥ नानक राहु पछाणहि सेइ ॥

रागु सारग महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1245

गुर प्रसादि लागे नाम सुआदि ॥
काहे जनमु गवावहु वैरि वादि ॥

रागु बसंत महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1176

गरबु करतु है देह को बिनसै छिन मै मीत ॥
जिहि प्रानी हरि जसु कहिओ नानक तिहि जगु जीति ॥

सलोक महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1428

गुन गावत तेरी उतरसि मैलु ॥
बिनसि जाइ हउमै बिखु फैलु ॥

गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 289

गुर सेवा ते भगति कमाई ॥ तब इह मानस देही पाई ॥

रागु भैरउ कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1159

गुण विचारे गिआनी सोइ ॥
गुण महि गिआनु परापति होइ ॥

रागु रामकली दख्खनी महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 931

गुरमुखि अंतरि सहजु है मनु चड़िआ दसवै आकासि ॥
तिथै ऊंघ न भुख है हरि अंमृत नामु सुख वासु ॥

सलोक वारां ते वधीक महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1414

गुर मिलिऐ नामु पाईऐ चूकै मोह पिआस ॥
हरि सेती मनु रवि रहिआ घर ही माहि उदासु ॥

श्री रागु महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 26

गुरि पूरै मेरी राखि लई ॥
अंमृत नामु रिदे महि दीनो जनम जनम की मैलु गई ॥

रागु बिलावल महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 823

गरीबा उपरि जि खिंजै दाड़ी ॥
पारब्रहमि सा अगनि महि साड़ी ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 199

गुर बिनु घोरु अंधारु गुरू बिनु समझ न आवै ॥
गुर बिनु सुरति न सिधि गुरू बिनु मुकति न पावै ॥

सवये महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1399

गिआनी धिआनी बहु उपदेसी इहु जगु सगलो धंधा ॥
कहि कबीर इक राम नाम बिनु इआ जगु माइआ अंधा ॥

रागु गउड़ी पूरबी, कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 338

गुर किरपा जिह नर कउ कीनी तिह इह जुगति पछानी ॥
नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ जिउ पानी संगि पानी ॥

रागु सोरठ महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 633

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए सु भलके उठि हरि नामु धिआवै ॥
उदमु करे भलके परभाती इसनानु करे अंमृत सरि नावै ॥

रागु गउड़ी महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 305

गुरमति सुनि कछु गिआनु न उपजिओ पसु जिउ उदरु भरउ ॥
कहु नानक प्रभ बिरदु पछानउ तब हउ पतित तरउ ॥

रागु धनासरी महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 685

गुर की मति तूं लेहि इआने ॥ भगति बिना बहु डूबे सिआने ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 288

गुड़ु करि गिआनु धिआनु करि धावै करि करणी कसु पाईऐ ॥
भाठी भवनु प्रेम का पोचा इतु रसि अमिउ चुआईऐ ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 360

गगन दमामा बाजिओ परिओ नीसानै घाओ ॥
खेतु जु माँडिओ सूरमा अब जूझन को दाउ ॥

रागु मारू कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1105

गला उपरि तपावसु न होई विसु खाधी ततकाल मरि जाए ॥
भाई वेखहु निआउ सचु करते का जेहा कोई करे तेहा कोई पाए ॥

रागु गउड़ी सलोक महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 308

गुर गोबिंद गोपाल गुर गुर पूरन नाराइणह ॥
गुर दइआल समरथ गुर गुर नानक पतित उधारणह ॥

रागु जैतसरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 710

गिआन अंजनु गुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु ॥
हरि किरपा ते संत भेटिआ नानक मनि परगासु ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 293

गोबरु जूठा चउका जूठा जूठी दीनी कारा ॥
कहि कबीर तेई नर सूचे साची परी बिचारा ॥

रागु बंसत हिंडोल भगत कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1195

गुर कै सबदि रता बैरागी निज घरि ताड़ी लाई ॥
सुध रस नामु महा रसु मीठा निज घरि ततु गुसाँईं ॥

रागु सारंग महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1232

गुरमुखि अंमृत बाणी बोलहि सभ आतम रामु पछाणी ॥
एको सेवनि एकु अराधहि गुरमुखि अकथ कहाणी ॥

रागु श्री महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 69

गुरु करता गुरु करणै जोगु ॥
गुरु परमेसरु है भी होगु ॥

रागु गोंड महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 864

गुर ते बूझै ता दरु सूझै ॥
नाम विहूणा कथि कथि लूझै ॥

रागु मारू महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1044

घ

घर ही महि अंमृतु भरपूरु है मनमुखा सादु न पाइआ ॥
जिउ कसतूरी मिरगु न जाणै भ्रमदा भरमि भुलाइआ ॥

रागु सोरठ महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 644

घरि घरि खाइआ पिंडु बधाइआ खिंथा मुंदा माइआ ॥
भूमि मसाण की भसम लगाई गुर बिनु ततु न पाइआ ॥

रागु गूजरी त्रिलोचन जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 526

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥ नानक राहु पछाणहि सेइ ॥

रागु सारंग महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1245

घरि बाहरि तेरा भरवासा तू जन कै है संगि ॥
करि किरपा प्रीतम प्रभ अपुने नामु जपउ हरि रंगि ॥

रागु धनासरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 677

घरि सुखि वसिआ बाहरि सुखु पाइआ ॥
कहु नानक गुरि मंत्रु दृड़ाइआ ॥

रागु भैरउ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1136

घघै घाल सेवकु जे घालै सबदि गुरू कै लागि रहै ॥
बुरा भला जे सम करि जाणै इन बिधि साहिबु रमतु रहै ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -432

घर महि ठाकुरु नदरि न आवै ॥ गल महि पाहणु लै लटकावै ॥

रागु सूही महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -739

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ॥
कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ॥

रागु सलोक महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1427

घर की नारि तिआगै अंधा ॥ पर नारी सिउ घालै धंधा ॥

रागु भैरउ नामदेउ जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1164

घर की नारि बहुतु हितु जा सिउ सदा रहत संग लागी ॥
जब ही हंस तजी इह काँइआ प्रेत प्रेत करि भागी ॥

रागु सोरठि महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -634

घूघर बाधि बजावहि ताला ॥ अंतरि कपटु फिरहि बेताला ॥

रागु बिभास प्रभाती महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1348

घर महि सूख बाहरि फुनि सूखा ॥
हरि सिमरत सगल बिनासे दूखा ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -385

घोली गेरू रंगु चड़ाइआ वसत्र भेख भेखारी ॥
कापड़ फारि बनाई खिंथा झोली माइआधारी ॥

रागु मारू महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1012

घरि घरि मागै जगु परबोधै मनि अंधै पति हारी ॥
भरमि भुलाणा सबदु न चीनै जूऐ बाजी हारी ॥

रागु मारू महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1012

घरै अंदरि सभु वथु है बाहरि किछु नाही ॥
गुर परसादी पाईऐ अंतरि कपट खुलाही ॥

रागु आसा महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -425

घाल न भानै अंतर बिधि जानै ता की करि मन सेवा ॥
करि पूजा होमि इहु मनूआ अकाल मूरति गुरदेवा ॥

रागु सोरठि महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -614

घोर दुखं अनिक हतं जनम दारिद्रं महा बिखादं ॥
मिटंत सगल सिमरंत हरि नाम नानक जैसे पावक कासट भसमं करोति ॥

सलोक सहसक्रीती महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1355

च

चंगिआईआ बुरिआईआ वाचे धरमु हदूरि ॥
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥

रागु माझ महला 2, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -146

चेतना है तउ चेत लै निसि दिनि मै प्रानी ॥
छिनु छिनु अउध बिहातु है फूटै घट जिउ पानी ॥

रागु तिलंग महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -726

चाकरीआ चंगिआईआ अवर सिआणप कितु ॥
नानक नामु समालि तूं बधा छुटहि जितु ॥

रागु सूही महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -729

चिंता भी आपि कराइसी अचिंतु भि आपे देइ ॥
नानक सो सालाहीऐ जि सभना सार करेइ ॥

सलोक कबीर जी, महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1376

चरण सरनि गुर एक पैडा जाइ चल, सतिगुर कोटि पैडा आगे होइ लेत है ।।

रागु कबित गुरदास जी-वार 111

चरन सीसु कर कंपन लागे नैनी नीरु असार बहै ॥
जिहवा बचनु सुधु नही निकसै तब रे धरम की आस करै ॥

रागु आसा कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -479

चिड़ी चुहकी पहु फुटी वगनि बहुतु तरंग ॥
अचरज रूप संतन रचे नानक नामहि रंग ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -319

चू कार अज़ हमह हीलते दर गुज़शत ।।
हलाल असत बुरदन ब शमसीर दसत ।।

पा: 10वीं जफरनामा

चिंता ता की कीजीऐ जो अनहोनी होइ ॥
इहु मारगु संसार को नानक थिरु नही कोइ ॥

सलोक महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1429

चंदन कै संगि तरवरु बिगरिओ ॥ सो तरवरु चंदनु होइ निबरिओ ॥

रागु भैरउ कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1158

चक्क्र चिहन अरु बरन जाति अरु पाति नहिन जिह ।।
रूप रंग अरु रेख भेख कोऊ कहि न सकत किह।।

पा: 10 वीं, जाप साहिब

चिड़ीओ से मैं बाज तड़ाऊ ।। सवा लाख से एक लड़ाऊ।।
तबे गोबिंद सिंघ नाम कहाऊ ।।

सरबलोह ग्रंथ

चरण गहे सरणि सुखदाते गुर कै बचनि जपे हरि जाप ॥
सागर तरे भरम भै बिनसे कहु नानक ठाकुर परताप ॥

रागु बिलावल महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -821

चरन कमल का आसरा प्रभ पुरख गुणतासु ॥
कीरतन नामु सिमरत रहउ जब लगु घटि सासु ॥

रागु बिलावल महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -818

चोआ चंदनु अंकि चड़ावउ ॥ पाट पटंबर पहिरि हढावउ ॥

रागु गउड़ी महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -225

चूका भारा करम का होए निहकरमा ॥
सागर ते कंढै चड़े गुरि कीने धरमा ॥

रागु मारू महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1002

चोर की हामा भरे न कोइ ॥ चोरु कीआ चंगा किउ होइ ॥

रागु धनासरी महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -662

चित्र गुपत का कागदु फारिआ जमदूता कछू न चली ॥
नानकु सिख देइ मन प्रीतम हरि लदे खेप सवली ॥

रागु श्री राग महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -79

चकवी कउ जैसे सूरु बालहा मान सरोवर हंसुला ॥
जिउ तरुणी कउ कंतु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥

रागु धनासरी नामदेव जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -693

चिटे जिन के कपड़े मैले चित कठोर जीउ ॥
तिन मुखि नामु न ऊपजै दूजै विआपे चोर जीउ ॥

रागु सूही महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -751

चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु ॥
गला करे घणेरीआ खसम न पाए सादु ॥

रागु आसा महला 2, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -474

छ

छोडहि अंनु करहि पाखंड ॥ ना सोहागनि ना ओहि रंड ॥

रागु गोंड कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -873

छोडि छोडि रे पाखंडी मन कपटु न कीजै ॥
हरि का नामु नित नितहि लीजै ॥

रागु रामकली नामदेव जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -973

छोडहु प्राणी कूड़ कबाड़ा ॥
कूडु मारे कालु उछाहाड़ा ॥

रागु मारू महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1025

छाडि सगल सिआणपा साध सरणी आउ ॥
पारब्रहम परमेसरो प्रभू के गुण गाउ ॥

रागु गूजरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -501

छोडिहु निंदा ताति पराई ॥
पड़ि पड़ि दझहि साति न आई ॥

रागु मारू महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1026

छाणी खाकु बिभूत चड़ाई माइआ का मगु जोहै ॥
अंतरि बाहरि एकु न जाणै साचु कहे ते छोहै ॥

रागु मारू महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1013

छिन महि राउ रंक कउ करई राउ रंक करि डारे ॥
रीते भरे भरे सखनावै यह ता को बिवहारे ॥

रागु बिहागड़ा महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -537

छोडहु काम क्रोधु बुरिआई ॥
हउमै धंधु छोडहु लंपटाई ॥

रागु मारू महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1026

ज

जितु पीतै मति दूरि होइ बरलु पवै विचि आइ ॥
आपणा पराइआ न पछाणई खसमहु धके खाइ ॥

रागु बिहागड़ा महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -554

जितु पीतै खसमु विसरै दरगह मिलै सजाइ ॥
झूठा मदु मूलि न पीचई जे का पारि वसाइ ॥

रागु बिहागड़ा महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -554

जागति जोत जपै निस बासुर एक बिना मन नैक न आनै ।।
पूरन प्रेम प्रतीत सजै ब्रत गोर मड़ी मट भूल न मानै ।।

पा: 10वीं, तेती सवैये

जब लगु जोति काइआ महि बरतै आपा पसू न बूझै ॥
लालच करै जीवन पद कारन लोचन कछू न सूझै ॥

रागु धनासरी कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -692

जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ पलीतु ॥
जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु ॥

रागु माझ महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -140

जिन्ा दिसंदड़िआ दुरमति वंञै मित्र असाडड़े सेई ॥
हउ ढूढेदी जगु सबाइआ जन नानक विरले केई ॥

रागु वार गुजरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -520

जिउ जल महि जलु आइ खटाना ॥
तिउ जोती संगि जोति समाना ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -278

जा कै रिदै बिस्रासु प्रभ आइआ ॥
ततु गिआनु तिसु मनि प्रगटाइआ ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -285

जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ॥
एते चानण होदिआँ गुर बिनु घोर अंधार ॥

रागु आसा महला 2, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -463

जब लगु मनि बैकुंठ की आस ॥
तब लगु होइ नही चरन निवासु ॥

रागु गउड़ी कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -325

जिना सतिगुरु पुरखु न सेविओ सबदि न कीतो वीचारु ॥
ओइ माणस जूनि न आखीअनि पसू ढोर गावार ॥

सलोक वारां रागु ते वधीक महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1418

जिसु गृहि बहुतु तिसै गृहि चिंता ॥ जिसु गृहि थोरी सु फिरै भ्रमंता ॥

रागु मारू महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1019

जो जो दीसै सो सो रोगी ॥
रोग रहित मेरा सतिगुरु जोगी ॥

रागु भैरउ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1140

जल कै मजनि जे गति होवै नित नित मेंडुक नावहि ॥
जैसे मेंडुक तैसे ओइ नर फिरि फिरि जोनी आवहि ॥

आसा कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -484

जीअ जंत सभि तिस दे सभना का सोई ॥
मंदा किस नो आखीऐ जे दूजा होई ॥

रागु आसा महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -425

जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ विचहु आपु गवाइ ॥
ओइ अंदरहु बाहरहु निरमले सचे सचि समाइ ॥

रागु श्री राग महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -28

जिना अंदरि कूड़ु वरतै सचु न भावई ॥
जे को बोलै सचु कूड़ा जलि जावई ॥

रागु सोवठि महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -646

जो पाथर कउ कहते देव ॥ ता की बिरथा होवै सेव ॥

रागु भैरउ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1160

जिस के सिर ऊपरि तूं सुआमी सो दुखु कैसा पावै ॥
बोलि न जाणै माइआ मदि माता मरणा चीति न आवै ॥

रागु सूही महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -749

जो तेरै रंगि राते सुआमी तिन् का जनम मरण दुखु नासा ॥
तेरी बखस न मेटै कोई सतिगुर का दिलासा ॥

रागु सूही महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -749

जाइ पुछहु सोहागणी तुसी राविआ किनी गुणी ॥
सहजि संतोखि सीगारीआ मिठा बोलणी ॥

रागु श्री राग महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -17

जाइ पुछहु सोहागणी वाहै किनी बाती सहु पाईऐ ॥
जो किछु करे सो भला करि मानीऐ हिकमति हुकमु चुकाईऐ ॥

रागु तिलंग महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -722

जा कै प्रेमि पदारथु पाईऐ तउ चरणी चितु लाईऐ ॥
सहु कहै सो कीजै तनु मनो दीजै ऐसा परमलु लाईऐ ॥

रागु तिलंग महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -722

जन की महिमा कथी न जाइ ॥
पारब्रहमु जनु रहिआ समाइ ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -193

जै कारणि तटि तीरथ जाही ॥
रतन पदारथ घट ही माही ॥

रागु गउड़ी महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -152

जिउ मंदर कउ थामै थंमनु ॥
तिउ गुर का सबदु मनहि असथंमनु ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -282

जिउ साबुनि कापर ऊजल होत ॥
नाम जपत सभु भ्रमु भउ खोत ॥

रागु रामकली महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -914

जिन्ी नामु विसारिआ किआ जपु जापहि होरि ॥
नानक जम पुरि बधे मारीअहि जिउ संन्ी उपरि चोर ॥

रागु सारंग महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1247

जीवत पितर न मानै कोऊ मूएं सिराध कराही ॥
पितर भी बपुरे कहु किउ पावहि कऊआ कूकर खाही ॥

रागु गउड़ी कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -332

जिनि जिनि नामु धिआइआ तिन के काज सरे ॥
हरि गुरु पूरा आराधिआ दरगह सचि खरे ॥

रागु माझ बारहमाह महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -136

जिचरु इहु मनु लहरी विचि है हउमै बहुतु अहंकारु ॥
सबदै सादु न आवई नामि न लगै पिआरु ॥

रागु सारंग महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1247

जा कउ मुसकलु अति बणै ढोई कोइ न देइ ॥
लागू होए दुसमना साक भि भजि खले ॥

रागु, श्री राग महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -70

जोगु न खिंथा जोगु न डंडै जोगु न भसम चड़ाईऐ ॥
जोगु न मुंदी मूंडि मुडाइऐ जोगु न सिङंी वाईऐ ॥

रागु सूही महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -730

जननी जानत सुतु बडा होतु है इतना कु न जानै जि दिन दिन अवध घटतु है ॥
मोर मोर करि अधिक लाडु धरि पेखत ही जमराउ हसै ॥

रागु श्री राग कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -91

जाति जनमु नह पूछीऐ सच घरु लेहु बताइ ॥
सा जाति सा पति है जेहे करम कमाइ ॥

रागु प्रभाती महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1330

जब लग खालसा रहै निआरा ।। तब लग तेज दीओ मैं सारा ।।

पा: 10वीं

जब इह गहै बिपरन की रीति ।। मैं न करउं इन की प्रतीत ।।

पा: 10वीं

जोगी होवा जगि भवा घरि घरि भीखिआ लेउ ॥
दरगह लेखा मंगीऐ किसु किसु उतरु देउ ॥

रागु मारू महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1089

जपु तपु संजमु होरु कोई नाही ॥
जब लगु गुर का सबदु न कमाही ॥

रागु मारू महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1060

जिउ भावै तिउ मोहि प्रतिपाल ॥
पारब्रहम परमेसर सतिगुर हम बारिक तुम् पिता किरपाल ॥

रागु बिलावल महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -**828**

जितु मुखि नामु न ऊचरहि बिनु नावै रस खाहि ॥
नानक एवै जाणीऐ तितु मुखि थुका पाहि ॥

रागु आसा वार महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -473

जितु बोलिऐ पति पाईऐ सो बोलिआ परवाणु ॥
फिका बोलि विगुचणा सुणि मूरख मन अजाण ॥

रागु श्री राग महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -15

जगतु भिखारी फिरतु है सभ को दाता रामु ॥
कहु नानक मन सिमरु तिह पूरन होवहि काम ॥

रागु सलोक महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1428

जा कउ हरि रंगु लागो इसु जुग महि सो कहीअत है सूरा ॥
आतम जिणै सगल वसि ता कै जा का सतिगुरु पूरा ॥

रागु धनासरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -679

जिन के चित कठोर हहि से बहहि न सतिगुर पासि ॥
ओथै सचु वरतदा कूड़िआरा चित उदासि ॥

रागु गउड़ी महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -314

जह जह काज किरति सेवक की तहा तहा उठि धावै ॥
सेवक कउ निकटी होइ दिखावै ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -403

जो जो कहै ठाकुर पहि सेवकु ततकाल होइ आवै ॥
तिसु सेवक कै हउ बलिहारी जो अपने प्रभ भावै ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -403

जिसु पाहण कउ ठाकुरु कहता ॥ ओहु पाहणु लै उस कउ डुबता ॥

रागु सूही महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -738

जल बिहून मीन कत जीवन दूध बिना रहनु कत बारो ॥
जन नानक पिआस चरन कमलन् की पेखि दरसु सुआमी सुख सारो ॥

रागु बिलावल महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -829

जिना भाणे का रसु आइआ ॥
तिन विचहु भरमु चुकाइआ ॥

रागु श्री राग महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -72

जगत मै झूठी देखी प्रीति ॥
अपने ही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा किआ मीत ॥

सलोक महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -536

जिनी ऐसा हरि नामु न चेतिओ से काहे जगि आए राम राजे ॥
इहु माणस जनमु दुलंभु है नाम बिना बिरथा सभु जाए ॥

रागु गुजरी महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -450

जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥

सलोक महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -8

जब कछु पावै तब गरबु करतु है ॥
माइआ गई तब रोवनु लगतु है ॥

रागु आसा रविदास जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -487

जैसा सुपना रैनि का तैसा संसार ॥
दृसटिमान सभु बिनसीऐ किआ लगहि गवार ॥

रागु बिलावल महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -808

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥ सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥

सलोक वारां ते वधीक महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1412

जब लगु मेरी मेरी करै ॥ तब लगु काजु एकु नही सरै ॥

रागु भैरउ कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1160

जब मेरी मेरी मिटि जाइ ॥ तब प्रभ काजु सवारहि आइ ॥

रागु भैरउ कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1160

जिनि मिलि मारे पंच सूरबीर ऐसो कउनु बली रे ॥
जिनि पंच मारि बिदारि गुदारे सो पूरा इह कली रे ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -404

जिन्ी नामु विसारिआ किआ जपु जापहि होरि ॥
बिसटा अंदरि कीट से मुठे धंधै चोरि ॥

रागु सारंग महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1247

जिउ कूकरु हरकाइआ धावै दह दिस जाइ ॥
लोभी जंतु न जाणई भखु अभखु सभ खाइ ॥

श्री, रागु महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -50

जनम मरण दुहहू महि नाही जन परउपकारी आए ॥
जीअ दानु दे भगती लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए ॥

रागु सूही महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -749

जिह प्रसादि छतीह अंमृत खाहि ॥
तिसु ठाकुर कउ रखु मन माहि ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -269

जिसु पापी कउ मिलै न ढोई ॥
सरणि आवै ताँ निरमलु होई ॥

रागु भैरउ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1141

जिना सासि गिरासि न विसरै हरि नामाँ मनि मंतु ॥
धंनु सि सेई नानका पूरनु सोई संतु ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 319

जीवणि मरणि सुखु होइ जिन्ा गुरु पाइआ ॥
नानक सचे सचि सचि समाइआ ॥

रागु आसा काफी महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -369

जिउ कामी कामि लुभावै ॥ तिउ हरि दास हरि जसु भावै ॥

रागु सोरठि महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -629

जिउ माता बालि लपटावै ॥ तिउ गिआनी नामु कमावै ॥

रागु सोरठि महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -629

जे मिरतक कउ चंदनु चड़ावै ॥ उस ते कहहु कवन फल पावै ॥
जे मिरतक कउ बिसटा माहि रुलाई ॥ ताँ मिरतक का किआ घटि जाई ॥

रागु भैरउ कबीर जी, महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1160

जिनी न पाइओ प्रेम रसु कंत न पाइओ साउ ॥
सुंञे घर का पाहुणा जिउ आइआ तिउ जाउ ॥

रागु सूही वार महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -790

जब लगु दुनीआ रहीऐ नानक किछु सुणीऐ किछु कहीऐ ॥
भालि रहे हम रहणु न पाइआ जीवतिआ मरि रहीऐ ॥

रागु धनासरी महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -661

जब हम होते तब तू नाही अब तूही मै नाही ॥
अनल अगम जैसे लहरि मइ ओदधि जल केवल जल माँही ॥

रागु सोरठि रविदास जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -657

जगतु जलंदा रखि लै आपणी किरपा धारि ॥
जितु दुआरै उबरै तितै लैहु उबारि ॥

रागु बिलावल महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -853

जुगह जुगह के राजे कीए गावहि करि अवतारी ॥
तिन भी अंतु न पाइआ ता का किआ करि आखि वीचारी ॥

रागु आसा महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -423

जिउ मीना बिनु पाणीऐ तिउ साकतु मरै पिआस ॥
तिउ हरि बिनु मरीऐ रे मना जो बिरथा जावै सासु ॥

रागु सोरठि महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -597

जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नै साणे ॥
सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नामु वखाणे ॥

रागु रामकली महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -938

जो सूरा तिस ही होइ मरणा ॥
जो भागै तिसु जोनी फिरणा ॥

रागु मारू महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1019

जब लगु जानै मुझ ते कछु होइ ॥ तब इस कउ सुखु नाही कोइ ॥

रागु गउड़ी सुखमनी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -278

जब इह जानै मै किछु करता ॥ तब लगु गरभ जोनि महि फिरता ॥

रागु गउड़ी सुखमनी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -278

जिउ जिउ तेरा हुकमु तिवै तिउ होवणा ॥
जह जह रखहि आपि तह जाइ खड़ोवणा ॥

रागु गुजरी वार महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -523

जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ॥
पीपा प्रणवै परम ततु है सतिगुरु होइ लखावै ॥

रागु धनासरी पीपा, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -695

जीउ तपतु है बारो बार ॥ तपि तपि खपै बहुतु बेकार ॥
जै तनि बाणी विसरि जाइ ॥ जिउ पका रोगी विललाइ ॥

रागु धनासरी महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -661

जाति जनमु नह पूछीऐ सच घरु लेहु बताइ ॥
सा जाति सा पति है जेहे करम कमाइ ॥

रागु प्रभाती महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1330

जोगु न भगवी कपड़ी जोगु न मैले वेसि ॥
नानक घरि बैठिआ जोगु पाईऐ सतिगुर कै उपदेसि ॥

रागु सलोक वारां ते वधीक महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1421

जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत ॥
कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीति ॥

सलोक महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1428

जा कउ रसु हरि रसु है आइओ ॥
सो अन रस नाही लपटाइओ ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -186

जो उपजिओ सो बिनसि है परो आजु कै कालि ॥
नानक हरि गुन गाइ ले छाडि सगल जंजाल ॥

सलोक महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1429

जिन कै पलै धनु वसै तिन का नाउ फकीर ॥
जिन् कै हिरदै तू वसहि ते नर गुणी गहीर ॥

रागु वार मलार, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1287

झ

झालाघे उठि नामु जपि निसि बासुर आराधि ॥
काहा तुझै न बिआपई नानक मिटै उपाधि ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -255

झखड़ु झागी मीहु वरसै भी गुरु देखण जाई ॥
समुंदु सागरु होवै बहु खारा गुरसिखु लंघि गुर पहि जाई ॥

रागु सूही महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -757

झिमि झिमि वरसै अंमृत धारा ॥ मनु पीवै सुनि सबदु बीचारा ॥

रागु माझ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -102

ट

टहल करहु तउ एक की जा ते बृथा न कोइ ॥
मनि तनि मुखि हीऐ बसै जो चाहहु सो होइ ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -255

टहल महल ता कउ मिलै जा कउ साध कृपाल ॥
साधू संगति तउ बसै जउ आपन होहि दइआल ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -255

टूटी गाढनहार गोपाल ॥
सरब जीआ आपे प्रतिपाल ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -282

ठ

ठाढि पाई करतारे ॥
तापु छोडि गइआ परवारे ॥

रागु सोरठि महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -622

ठाकुरु छोडि दासी कउ सिमरहि मनमुख अंध अगिआना ॥
हरि की भगति करहि तिन निंदहि निगुरे पसू समाना ॥

रागु भैरउ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1138

ठाकुरु हमरा सद बोलंता ॥ सरब जीआ कउ प्रभु दानु देता ॥

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1160

ठीकर फोर दिलीस सिरि प्रभ पुर किया पयान ।।
तेग बहादर सी क्रिआ करी न किनहूं आन ।।

पातिसाही 10वीं

ठाकुर ऐसो नामु तुम्रारो ॥
सगल सृसटि को धणी कहीजै जन को अंगु निरारो ॥

रागु राग गुजरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -498

ठाकुर जीउ तुहारो परना ॥
मानु महतु तुम्रारै ऊपरि तुम्री ओट तुम्रारी सरना ॥

रागु कानड़ा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1299

ठाकुर तुम् सरणाई आइआ ॥
उतरि गइओ मेरे मन का संसा जब ते दरसनु पाइआ ॥

रागु सारग महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1218

ड

डरि घरु घरि डरु डरि डरु जाइ ॥
सो डरु केहा जितु डरि डरु पाइ ॥

रागु गउड़ी महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -151

डरीऐ जे डरु होवै होरु ॥
डरि डरि डरणा मन का सोरु ॥

रागु गउड़ी गुआरेरी महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -151

डंडउति बंदन अनिक बार सरब कला समरथ ॥
डोलन ते राखहु प्रभू नानक दे करि हथ ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -256

डंडा मुंद्रा खिंथा आधारी ॥
भ्रम कै भाइ भवै भेखधारी ॥

रागु बिलावल कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -856

डंड कमंडल सिखा सूतु धोती तीरथि गवनु अति भ्रमनु करै ॥
राम नाम बिनु साँति न आवै जपि हरि हरि नामु सु पारि परै ॥

रागु भैरउ महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1127

डरि डरि मरते जब जानीऐ दूरि ॥
डरु चूका देखिआ भरपूरि ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -186

डिठे सभे थाव नही तुधु जेहिआ ॥
बधोहु पुरखि बिधातै ताँ तू सोहिआ ॥

फनहे महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1362

ढ

ढढा ढूढत कह फिरहु ढूढनु इआ मन माहि ॥
संगि तुहारै प्रभु बसै बनु बनु कहा फिराहि ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -256

ढूंढत डोलहि अंध गति अरु चीनत नाही संत ॥
कहि नामा किउ पाईऐ बिनु भगतहु भगवंतु ॥

सलोक कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1377

ढाढी तिस नो आखीऐ जि खसमै धरे पिआरु ॥
दरि खड़ा सेवा करे गुर सबदी वीचारु ॥

रागु गूजरी की वार महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -516

त

तेरी पनह खुदाइ तू बखसंदगी ॥
सेख फरीदै खैरु दीजै बंदगी ॥

रागु आसा फरीद, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -488

तृसना बिरले ही की बुझी हे ॥
कोटि जोरे लाख क्रोरे मनु न होरे ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -213

तोरउ न पाती पूजउ न देवा ॥
राम भगति बिनु निहफल सेवा ॥

रागु भैरउ कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1158

तू एकंकारु निरालमु राजा ॥
तू आपि सवारहि जन के काजा ॥

रागु मारू महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1039

तेरा कवणु गुरू जिस का तू चेला ॥
सबदु गुरू सुरति धुनि चेला ॥

रागु रामकली महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -942

तिन कउ तखति मिली वडिआई ॥
निरभउ मनि वसिआ लिव लाई ॥

रागु मारू महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1023

तकहि नारि पराईआ लुकि अंदरि ठाणी ॥
संनी देनि विखंम थाइ मिठा मदु माणी ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -315

तू प्रभ दाता दानि मति पूरा हम थारे भेखारी जीउ ॥
मै किआ मागउ किछु थिरु न रहाई हरि दीजै नामु पिआरी जीउ ॥

रागु सोरठ महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -597

तीरथि नावण जाउ तीरथु नामु है ॥
तीरथु सबद बीचारु अंतरि गिआनु है ॥

रागु धनासरी महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -687

तेरा एकु नामु तारे संसारु ॥
मै एहा आस एहो आधारु ॥

रागु, श्री रागु महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -24

तूं सभनी थाई जिथै हउ जाई साचा सिरजणहारु जीउ ॥
सभना का दाता करम बिधाता दूख बिसारणहारु जीउ ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -438

तूं मेरा पिता तूंहै मेरा माता ॥ तूं मेरा बंधपु तूं मेरा भ्राता ॥
तूं मेरा राखा सभनी थाई ता भउ केहा काड़ा जीउ ॥

रागु माझ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -103

तनु धनु जिह तो कउ दीओ ताँ सिउ नेहु न कीन ॥
कहु नानक सुनु रे मना सो मूरति भगवान ॥

रागु सलोक महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1426

तेरा नामु करी चनणाठीआ जे मनु उरसा होइ ॥
करणी कुंगू जे रलै घट अंतरि पूजा होइ ॥

रागु गुजरी महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -489

तू कहीअत ही आदि भवानी ॥
मुकति की बरीआ कहा छपानी ॥

रागु गोंड नामदेव जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -874

तै साहिब की बात जि आखै कहु नानक किआ दीजै ॥
सीसु वढे करि बैसणु दीजै विणु सिर सेव करीजै ॥

रागु वंडहंसु महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -558

अंनु न खाइआ सादु गवाइआ ॥
बहु दुखु पाइआ दूजा भाइआ ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -467

तुम कहीअत हौ जगत गुर सुआमी ॥ हम कहीअत कलिजुग के कामी ॥

जैतिसरी रविदास जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -710

तनु धनु जिह तो कउ दीओ ताँ सिउ नेहु न कीन ॥
कहु नानक नर बावरे अब किउ डोलत दीन ॥

सलोक महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1426

तव गुन कहा जगत गुरा जउ करमु न नासै ॥
सिंघ सरन कत जाईऐ जउ जंबुकु ग्रासै ॥

रागु बिलावल बाणी, सधने जी की, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -858

तजि अभिमानु लेहु मन मोलि ॥
राम नामु हिरदे महि तोलि ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -283

तुम कत ब्राहमण हम कत सूद ॥
हम कत लोहू तुम कत दूध ॥

रागु गउड़ी कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -324

तुम् देवहु सभु किछु दइआ धारि हम अकिरतघनारे ॥
लागि परे तेरे दान सिउ नह चिति खसमारे ॥

रागु बिलावल महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -809

तजै गिरसतु भइआ बन वासी इकु खिनु मनूआ टिकै न टिकईआ ॥
धावतु धाइ तदे घरि आवै हरि हरि साधू सरणि पवईआ ॥

रागु बिलावल महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -835

तू काहे डोलहि प्राणीआ तुधु राखैगा सिरजणहारु ॥
जिनि पैदाइसि तू कीआ सोई देइ आधारु ॥

रागु तिलंग महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -724

तजि अभिमान मोह माइआ फुनि भजन राम चितु लावउ ॥
नानक कहत मुकति पंथ इहु गुरमुखि होइ तुम पावउ ॥

रागु गउड़ी महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -219

तृसन न बूझी बहु रंग माइआ ॥
नामु लैत सरब सुख पाइआ ॥

रागु कानड़ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1298

तुधु चिति आए महा अनंदा जिसु विसरहि सो मरि जाए ॥
दइआलु होवहि जिसु ऊपरि करते सो तुधु सदा धिआए ॥

रागु सूही महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -749

तिना अनंदु सदा सुखु है जिना सचु नामु आधारु ॥
गुर सबदी सचु पाइआ दूख निवारणहारु ॥

रागु, श्री राग महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -36

तह साच निआइ निबेरा ॥
ऊहा सम ठाकुरु सम चेरा ॥

रागु सोरठ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 621

तिस की सरनी परु मना जिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥
जिसु सिमरत सुखु होइ घणा दुखु दरदु न मूले होइ ॥

रागु, श्री राग महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -44

तब लगु महलु न पाईऐ जब लगु साचु न चीति ॥
सबदि रपै घरु पाईऐ निरबाणी पदु नीति ॥

रागु, श्री राग महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -58

तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ॥
कनक कटिक जल तरंग जैसा ॥

श्री रागु रविदास जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -93

तुधु आगै अरदासि हमारी जीउ पिंडु सभु तेरा ॥
कहु नानक सभ तेरी वडिआई कोई नाउ न जाणै मेरा ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -383

तुधनो छोडि जाईऐ प्रभ कैं धरि ॥
आन न बीआ तेरी समसरि ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -371

तू दरीआउ दाना बीना मै मछुली कैसे अंतु लहा ॥
जह जह देखा तह तह तू है तुझ ते निकसी फूटि मरा ॥

रागु श्री महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -25

तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता तेरा पारु न पाइआ जाइ जीउ ॥
तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि सभ महि रहिआ समाइ जीउ ॥

रागु आसा महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -448

तजहु सिआनप सुरि जनहु सिमरहु हरि हरि राइ ॥
एक आस हरि मनि रखहु नानक दूखु भरमु भउ जाइ ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -281

तिआगें मन की मतड़ी विसारें दूजा भाउ जीउ ॥
इउ पावहि हरि दरसावड़ा नह लगै ततो वाउ जीउ ॥

रागु सूही महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -763

थ

थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई ॥
जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥

जपुजी महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -4

थालै विचि तै वसतू पईओ हरि भोजनु अंमृतु सारु ॥
जितु खाधै मनु तृपतीऐ पाईऐ मोख दुआरु ॥

रागु सोरठि महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -645

थान थनंतरि रवि रहिआ मेरी जिंदुड़ीए पारब्रहमु प्रभु दाता राम ॥
ता का अंतु न पाईऐ मेरी जिंदुड़ीए पूरन पुरखु बिधाता राम ॥

रागु बिहागड़ा महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -541

थाके पंच दूत सभ तसकर आप आपणै भ्रमते ॥
थाका मनु कुंचर उरु थाका तेजु सूतु धरि रमते ॥

रागु आसा कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -480

थान थनंतरि रवि रहिआ पारब्रहमु प्रभु सोइ ॥
सभना दाता एकु है दूजा नाही कोइ ॥

रागु, श्री महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -45

द

ददा दाता एकु है सभ कउ देवनहार ॥
देंदे तोटि न आवई अगनत भरे भंडार ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -257

दरगहि लेखा मंगीऐ कोई अंति न सकी छडाइ ॥
बिनु नावै सभु दुखु है दुखदाई मोह माइ ॥

सलोक वारां ते वधीक महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1422

दास तुमारे की पावउ धूरा मसतकि ले ले लावउ ॥
महा पतित ते होत पुनीता हरि कीरतन गुन गावउ ॥

रागु टोडी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -712

देइ किवाड़ अनिक पड़दे महि पर दारा संगि फाकै ॥
चित्र गुपतु जब लेखा मागहि तब कउणु पड़दा तेरा ढाकै ॥

रागु सोरठि महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -616

दिनसु न रैनि बेदु नही सासत्र तहा बसै निरंकारा ॥
कहि कबीर नर तिसहि धिआवहु बावरिआ संसारा ॥

रागु आसा कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -484

दस अउतार राजे होइ वरते महादेव अउधूता ॥
तिन् भी अंतु न पाइओ तेरा लाइ थके बिभूता ॥

रागु सूही महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -747

देही माटी बोलै पउणु ॥ बुझु रे गिआनी मूआ है कउणु ॥

रागु गउड़ी महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -152

मूई सुरति बादु अहंकारु ॥ ओहु न मूआ जो देखणहारु ॥

रागु गउड़ी महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -152

देवी देवा पूजहि डोलहि पारब्रहम नही जाना ॥
कहत कबीर अकुलु नही चेतिआ बिखिआ सिउ लपटाना ॥

रागु गउड़ी बैरा रानी कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -332

दिलहु मुहबति जिंन् सेई सचिआ ॥
जिन् मनि होरु मुखि होरु सि काँढे कचिआ ॥

रागु आसा फरीद जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -488

दासन दासा होइ रहु हउमै बिखिआ मारि ॥
जनमु पदारथु जीतिआ कदे न आवै हारि ॥

रागु कानड़ा की वार महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1312

देखु फरीदा जु थीआ दाड़ी होई भूर ॥
अगहु नेड़ा आइआ पिछा रहिआ दूरि ॥

रागु सलोक फरीद जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1378

दरसन पिआसी दिनसु राति चितवउ अनदिनु नीत ॥
खोलि कपट गुरि मेलीआ नानक हरि संगि मीत ॥

रागु जैतसरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -703

दोवै थाव रखे गुर सूरे ॥
हलत पलत पारब्रहमि सवारे कारज होए सगले पूरे ॥

रागु बिलावल महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 825

दूत दुसमन सभि तुझ ते निवरहि प्रगट प्रतापु तुमारा ॥
जो जो तेरे भगत दुखाए ओहु ततकाल तुम मारा ॥

रागु धनासरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -681

दिनु राती आराधहु पिआरो निमख न कीजै ढीला ॥
संत सेवा करि भावनी लाईऐ तिआगि मानु हाठीला ॥

रागु गुजरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -498

दास तेरे की बेनती रिद करि परगासु ॥
तुम्री कृपा ते पारब्रहम दोखन को नासु ॥

रागु बिलावल महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -818

दिन ते पहर पहर ते घरीआँ आव घटै तनु छीजै ॥
कालु अहेरी फिरै बधिक जिउ कहहु कवन बिधि कीजै ॥

रागु धनासरी कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -692

दुखी दुनी सहेड़ीऐ जाइ त लगहि दुख ॥
नानक सचे नाम बिनु किसै न लथी भुख ॥

रागु मलार महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1287

दाती साहिब संदीआ किआ चलै तिसु नालि ॥
इक जागंदे ना लहंनि इकना सुतिआ देइ उठालि ॥

श्री रागु महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -83

दरगहि लेखा मंगीऐ कोई अंति न सकी छडाइ ॥
बिनु नावै सभु दुखु है दुखदाई मोह माइ ॥

सलोक वारां ते, वधीक महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1422

ददै दोसु न देऊ किसै दोसु करंमा आपणिआ ॥
जो मै कीआ सो मै पाइआ दोसु न दीजै अवर जना ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -433

दीन दइआल कृपाल सुख सागर सरब घटा भरपूरी रे ॥
पेखत सुनत सदा है संगे मै मूरख जानिआ दूरी रे ॥

रागु सोरठि महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -612

देखा देखी सभ करे मनमुखि बूझ न पाइ ॥
जिन गुरमुखि हिरदा सुधु है सेव पई तिन थाइ ॥

रागु, श्री रागु महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -28

देवी देवा पूजीऐ भाई किआ मागउ किआ देहि ॥
पाहणु नीरि पखालीऐ भाई जल महि बुडहि तेहि ॥

रागु सोरठि महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -637

दोसु न काहू दीजीऐ प्रभु अपना धिआईऐ ॥
जितु सेविऐ सुखु होइ घना मन सोई गाईऐ ॥

रागु बिलावल महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -809

दुसटा नालि दोसती नालि संता वैरु करंनि ॥
आपि डुबे कुटंब सिउ सगले कुल डोबंनि ॥

रागु सूही महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -755

देहुरा मसीत सोई पूजा औ निवाज ओई मानस सभै अनेक को भ्रमाउ है।।
देहुरा मसीत सोई पूजा औ निवाज ओई मानस सभै अनेक को भ्रमाउ है।।

पातसाहि 10वीं अकाल उसतति

ध

ध्रिगु खाणा ध्रिगु पैन्णा जिन्ा दूजै भाइ पिआरु ॥
बिसटा के कीड़े बिसटा राते मरि जंमहि होहि खुआरु ॥

रागु प्रभाती महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 1347

घरे केस पाहुल बिना भेखी मूड़ा सिख ।।
मेरा दरसन नाहि तिस पापी तिआगे बिख।।

सरल लोह ग्रंथ

धन पिरु एहि न आखीअनि बहनि इकठे होइ ॥
एक जोति दुइ मूरती धन पिरु कहीऐ सोइ ॥

रागु सूही महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -788

धनु सु वेला जितु दरसनु करणा ॥
हउ बलिहारी सतिगुर चरणा ॥

रागु वडहंस महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -562

ध्रिगु तिना का जीविआ जि लिखि लिखि वेचहि नाउ ॥
खेती जिन की उजड़ै खलवाड़े किआ थाउ ॥

रागु सारस महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1245

धनु दारा संपति सगल जिनि अपुनी करि मानि ॥
इन मै कछु संगी नही नानक साची जानि ॥

सलोक महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1426

धन भूमि का जो करै गुमानु ॥
सो मूरखु अंधा अगिआनु ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -278

धंनि सुहागनि जो पीअ भावै ॥
कहि कबीर फिरि जनमि न आवै ॥

रागु आसा कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -483

धरम राइ जब लेखा मागै किआ मुखु लै कै जाहिगा ॥
कहतु कबीरु सुनहु रे संतहु साधसंगति तरि जाँहिगा ॥

रागु मारू कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1106

धर जीअरे इक टेक तू लाहि बिडानी आस ॥
नानक नामु धिआईऐ कारजु आवै रासि ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -257

धनु धनु कहा पुकारते माइआ मोह सभ कूर ॥
नाम बिहूने नानका होत जात सभु धूर ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -250

धंधा पिटिहु भाईहो तुम् कूड़ु कमावहु ॥
ओहु न सुणई कत ही तुम् लोक सुणावहु ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -418

धंनु सु कागदु कलम धंनु धनु भाँडा धनु मसु ॥
धनु लेखारी नानका जिनि नामु लिखाइआ सचु ॥

रागु मलार सलोक महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1291

न

नावन कउ तीरथ घने मन बउरा रे पूजन कउ बहु देव ॥
कहु कबीर छूटनु नही मन बउरा रे छूटनु हरि की सेव ॥

रागु गउड़ी कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -336

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥

रागु, श्री राग महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -15

नाना रूप जिउ स्वागी दिखावै ॥
जिउ प्रभ भावै तिवै नचावै ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -278

निरभउ जपै सगल भउ मिटै ॥
प्रभ किरपा ते प्राणी छुटै ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -293

नाम बिना जो पहिरै खाइ ॥ जिउ कूकर जूठन महि पाइ ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -240

नाम बिना जेता बिउहारु ॥ जिउ मिरतक मिथिआ सीगारु ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -240

नदीआ विचि टिबे देखाले थली करे असगाह ॥
कीड़ा थापि देइ पातिसाही लसकर करे सुआह ॥

रागु माझ वार महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -144

नानक नामु मिलै वडिआई एदू उपरि करमु नही ॥
जे घरि होदै मंगणि जाईऐ फिरि ओलामा मिलै तही ॥

रागु रामकली महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -903

नानक सोई दिनसु सुहावड़ा जितु प्रभु आवै चिति ॥
जितु दिनि विसरै पारब्रहमु फिटु भलेरी रुति ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -318

नउ दरवाजे काइआ कोटु है दसवै गुपतु रखीजै ॥
बजर कपाट न खुलनी गुर सबदि खुलीजै ॥

रागु रामकली महला 2, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -954

नीद सुहेली नाम की लागी भूख ॥
हरि सिमरत बिनसे सभ दूख ॥

रागु रामकली महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -901

नरपति एकु सिंघासनि सोइआ सुपने भइआ भिखारी ॥
अछत राज बिछुरत दुखु पाइआ सो गति भई हमारी ॥

रागु सोरठ रविदास जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -657

नाँगे आवणा नाँगे जाणा हरि हुकमु पाइआ किआ कीजै ॥
जिस की वसतु सोई लै जाइगा रोसु किसै सिउ कीजै ॥

रागु सारग महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1246

निज नारी के संग नेहु तुम नित बडीअहु ।।
पर नारी की सेज भूल सुपने ना जईअहु ।।

भाई गुरदास जी

नानक हरि नामु जिनी आराधिआ अनदिनु हरि लिव तार ॥
माइआ बंदी खसम की तिन अगै कमावै कार ॥

रागु, श्री राग महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 90

ना इहु बूढा ना इहु बाला ॥ ना इसु दूखु नही जम जाला ॥

रागु गोंड महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -868

ना इहु बिनसै ना इहु जाइ ॥ आदि जुगादी रहिआ समाइ ॥

रागु गोंड महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -868

नानकु आखै रे मना सुणीऐ सिख सही ॥
लेखा रबु मंगेसीआ बैठा कढि वही ॥

रागु रामकली महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -953

नानक नाम चड़दी कला ।।
तेरे भाणे सरबत्त दा भला ।।

अरदास

निंदा भली किसै की नाही मनमुख मुगध करंनि ॥
मुह काले तिन निंदका नरके घोरि पवंनि ॥

रागु सूही महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -755

नदीआ वाह विछुंनिआ मेला संजोगी राम ॥
जुगु जुगु मीठा विसु भरे को जाणै जोगी राम ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -439

ना हरि भजिओ न गुर जनु सेविओ नह उपजिओ कछु गिआना ॥
घट ही माहि निरंजनु तेरै तै खोजत उदिआना ॥

रागु सोरठि महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -632

नाना झूठि लाइ मनु तोखिओ नह बूझिओ अपनाइओ ॥
परउपकार न कबहू कीए नही सतिगुरु सेवि धिआइओ ॥

रागु टोडी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -712

नाँगे आवनु नाँगे जाना ॥
कोइ न रहिहै राजा राना ॥

रागु भैरउ कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1157

नगन फिरत जौ पाईऐ जोगु ॥
बन का मिरगु मुकति सभु होगु ॥

रागु गउड़ी कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -324

नह निंदिआ नह उसतति जा कै लोभु मोहु अभिमाना ॥
हरख सोग ते रहै निआरउ नाहि मान अपमाना ॥

रागु सोरठि महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -633

नानक तिना बसंतु है जिन् घरि वसिआ कंतु ॥
जिन के कंत दिसापुरी से अहिनिसि फिरहि जलंत ॥

रागु सूही वार महला 2, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -791

निमख काम सुआद कारणि कोटि दिनस दुखु पावहि ॥
घरी मुहत रंग माणहि फिरि बहुरि बहुरि पछुतावहि ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -403

प

पड़ि पड़ि पंडित मोनी थके बेदाँ का अभिआसु ॥
हरि नामु चिति न आवई नह निज घरि होवै वासु ॥

रागु मलार महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1277

प्रभ की उसतति करहु संत मीत ॥
सावधान एकागर चीत ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -295

पापी करम कमावदे करदे हाए हाइ ॥
नानक जिउ मथनि माधाणीआ तिउ मथे ध्रम राइ ॥

रागु सलोक महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1425

पूजहु रामु एकु ही देवा ॥
साचा नावणु गुर की सेवा ॥

रागु आसा कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -484

प्राणी एको नामु धिआवहु ॥
अपनी पति सेती घरि जावहु ॥

रागु मलार महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1254

पाँच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान ॥
जिह ते उपजिओ नानका लीन ताहि मै मानु ॥

सलोक महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1426

पूजा वरत तिलक इसनाना पुंन दान बहु दैन ॥
कहूं न भीजै संजम सुआमी बोलहि मीठे बैन ॥

रागु धनासरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -674

पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई ॥
तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई ॥

रागु धनासरी महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -684

पपै पातिसाहु परमेसरु वेखण कउ परपंचु कीआ ॥
देखै बूझै सभु किछु जाणै अंतरि बाहरि रवि रहिआ ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -433

प्रानी कछू न चेतई मदि माइआ कै अंधु ॥
कहु नानक बिनु हरि भजन परत ताहि जम फंध ॥

सलोक महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1427

पचै पतंगु मृग भ्रिंग कुंचर मीन इक इंद्री पकरि सघारे ॥
पंच भूत सबल है देही गुरु सतिगुरु पाप निवारे ॥

रागु नट महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -983

पतित उधारन भै हरन हरि अनाथ के नाथ ॥
कहु नानक तिह जानीऐ सदा बसतु तुम साथि ॥

रागु सलोक महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1426

प्रीतम जानि लेहु मन माही ॥
अपने सुख सिउ ही जगु फाँधिओ को काहू को नाही ॥

रागु सोरठि महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -634

परभाते प्रभ नामि जपि गुर के चरण धिआइ ॥
जनम मरण मलु उतरै सचे के गुण गाइ ॥

रागु मारू महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1099

प्रभ सिउ लागि रहिओ मेरा चीतु ॥
आदि अंति प्रभु सदा सहाई धंनु हमारा मीतु ॥

रागु धनासरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -682

पउणै पाणी अगनी का मेलु ॥ चंचल चपल बुधि का खेलु ॥

रागु गउड़ी महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -152

पूरन परम जोति परमेसर प्रीतम प्रान हमारे ॥
मोहन मोहि लीआ मनु मेरा समझसि सबदु बीचारे ॥

रागु सारंग महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1197

प्राणी तूं आइआ लाहा लैणि ॥
लगा कितु कुफकड़े सभ मुकदी चली रैणि ॥

रागु, श्री राग महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -43

परवदगार अपार अगम बेअंत तू ॥
जिना पछाता सचु चुंमा पैर मूं ॥

आसा सेख फरीद जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -488

पाती तोरै मालिनी पाती पाती जीउ ॥ जिसु पाहन कउ पाती तोरै सो पाहन निरजीउ ॥
भूली मालनी है एउ ॥ सतिगुरु जागता है देउ ॥

रागु आसा कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -479

प्रथमे मनु परबोधै अपना पाछै अवर रीझावै ॥
राम नाम जपु हिरदै जापै मुख ते सगल सुनावै ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -381

पंडित वाचहि पोथीआ ना बूझहि वीचारु ॥
अन कउ मती दे चलहि माइआ का वापारु ॥

रागु, श्री राग महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -56

परभाते प्रभ नामि जपि गुर के चरण धिआइ ॥
जनम मरण मलु उतरै सचे के गुण गाइ ॥

रागु मारू महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1099

प्रातहकलि हरि नामु उचारी ॥
ईत ऊत की ओट सवारी ॥

रागु सूही महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -743

पेखत चाखत कहीअत अंधा सुनीअत सुनीऐ नाही ॥
निकटि वसतु कउ जाणै दूरे पापी पाप कमाही ॥

रागु सूही महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -741

पुंन दान जप तप जेते सभ ऊपरि नामु ॥
हरि हरि रसना जो जपै तिसु पूरन कामु ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -401

प्रभ की आगिआ आतम हितावै ॥
जीवन मुकति सोऊ कहावै ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -275

पाथरु ले पूजहि मुगध गवार ॥
ओहि जा आपि डुबे तुम कहा तरणहारु ॥

रागु बिहागड़ा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -556

प्रथमे तिआगी हउमै प्रीति ॥
दुतीआ तिआगी लोगा रीति ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -370

पुंन दान अनेक किरिआ साधू संगि समाइ ॥
ताप संताप मिटे नानक बाहुड़ि कालु न खाइ ॥

रागु कानड़ा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1300

पूरि रहिआ स्रब ठाइ हमारा खसमु सोइ ॥
एकु साहिबु सिरि छतु दूजा नाहि कोइ ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -398

प्रानी नाराइन सुधि लेहि ॥
छिनु छिनु अउध घटै निसि बासुर बृथा जातु है देह ॥

रागु रामकली महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -902

पूता माता की आसीस ॥
निमख न बिसरउ तुम कउ हरि हरि सदा भजहु जगदीस ॥

रागु गुजरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -496

पूजा करउ न निवाज गुजारउ ॥
एक निरंकार ले रिदै नमसकारउ ॥

रागु भैरउ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1136

पंच ततु मिलि काइआ कीनी ततु कहा ते कीनु रे ॥
करम बध तुम जीउ कहत हौ करमहि किनि जीउ दीनु रे ॥

रागु गोंड कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -870

पहिला मरणु कबूलि जीवण की छडि आस ॥
होहु सभना की रेणुका तउ आउ हमारै पासि ॥

रागु मारू महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1102

पिता का जनमु कि जानै पूतु ॥
सगल परोई अपुनै सूति ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -284

पुत्र कलत्र लछमी माइआ ॥
इन ते कहु कवनै सुखु पाइआ ॥

रागु धनासरी कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -692

पहिलै पहरै फुलड़ा फलु भी पछा राति ॥
जो जागंनि लहंनि से साई कंनो दाति ॥

रागु सलोक फरीद, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1384

पसू मिलहि चंगिआईआ खड्ड खावहि अंमृतु देहि ॥
नाम विहूणे आदमी ध्रिगु जीवण करम करेहि ॥

रागु गुजरी महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -489

पंजि निवाजा वखत पंजि पंजा पंजे नाउ ॥ पहिला सचु हलाल दुइ तीजा खैर खुदाइ ॥
चउथी नीअति रासि मनु पंजवी सिफति सनाइ ॥ करणी कलमा आखि कै ता मुसलमाणु सदाइ ॥

रागु वार माझ महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -141

फ

फिटु इवेहा जीविआ जितु खाइ वधाइआ पेटु ॥
नानक सचे नाम विणु सभो दुसमनु हेतु ॥

रागु सूही महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -790

फिरत फिरत बहुते जुग हारिओ मानस देह लही ॥
नानक कहत मिलन की बरीआ सिमरत कहा नही ॥

रागु सोरठि महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -631

फकड़ जाती फकड्ड नाउ ॥
सभना जीआ इका छाउ ॥ श्री रागु वार महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -83

फूटो आँडा भरम का मनहि भइओ परगासु ॥
काटी बेरी पगह ते गुरि कीनी बंदि खलासु ॥

रागु मारू महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1002

फरीदा जंगलु जंगलु किआ भवहि वणि कंडा मोड़ेहि ॥
वसी रबु हिआलीऐ जंगलु किआ ढूढेहि ॥

रागु सलोक फरीद जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1378

फरीदा जन्नी कंमी नाहि गुण ते कंमड़े विसारि ॥
मतु सरमिंदा थीवही साँई दै दरबारि ॥

रागु फरीद जी सलोक 59, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1381

फरीदा पिछल राति न जागिओहि जीवदड़ो मुइओहि ॥
जे तै रबु विसारिआ त रबि न विसरिओहि ॥

रागु फरीद जी सलोक 107, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1383

फरीदा चारि गवाइआ हंढि कै चारि गवाइआ संमि ॥
लेखा रबु मंगेसीआ तू आँहो केरे कंमि ॥

रागु सलोक फरीद जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1379

फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख ॥
आपनड़े गिरीवान महि सिरु नींवाँ करि देखु ॥

रागु सलोक फरीद, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1378

फरीदा दरीआवै कंन्नै बगुला बैठा केल करे ॥
केल करेदे हंझ नो अचिंते बाज पए ॥

रागु सलोक फरीद जी 99, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1383

फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ उसारेदे भी गए ॥
कूड़ा सउदा करि गए गोरी आइ पए ॥

सलोक फरीद जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1380

फरीदा काले मैडे कपड़े काला मैडा वेसु ॥
गुनही भरिआ मै फिरा लोकु कहै दरवेसु ॥

सलोक फरीद जी 60, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1381

फरीदा मै जानिआ दुखु मुझ कू दुखु सबाइऐ जगि ॥
ऊचे चड़ि कै देखिआ ताँ घरि घरि एहा अगि ॥

सलोक फरीद जी 81, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1382

फरीदा खालकु खलक महि खलक वसै रब माहि ॥
मंदा किस नो आखीऐ जाँ तिसु बिनु कोई नाहि ॥

सलोक फरीद जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1381

फरीदा जा लबु ता नेहु किआ लबु त कूड़ा नेहु ॥
किचरु झति लघाईऐ छपरि तुटै मेहु ॥

सलोक महला 318, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1378

ब

बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंमृतु सारे ॥
गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरू निसतारे ॥

रागु नट महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -982

ब्रहमा बिसनु महेसु न कोई ॥ अवरु न दीसै एको सोई ॥
नारि पुरखु नही जाति न जनमा ना को दुखु सुखु पाइदा ॥

रागु मारू महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1035

बुत पूजि पूजि हिंदू मूए तुरक मूए सिरु नाई ॥
ओइ ले जारे ओइ ले गाडे तेरी गति दुहू न पाई ॥

रागु सोरठि कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -654

बिनु नावै भेख करहि बहुतेरे सचै आपि खुआई ॥
सतिगुर ते नामु पाईऐ अउधू जोग जुगति ता होई ॥

रागु रामकली महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -946

बिन करतार न किरतम मानो ।।
आदि अजोनि अजै अबिनासी तिह परमेशर जानो ।।

रागु कलियान पातिसाही 10वीं

बाहरि धोती तूमड़ी अंदरि विसु निकोर ॥
साध भले अणनातिआ चोर सि चोरा चोर ॥

रागु सूही वार महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -789

बादु बिबादु काहू सिउ न कीजै ॥
रसना राम रसाइनु पीजै ॥

रागु भैरउ नामदेव, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1164

बेद कतेब सिमृति सभि सासत इन् पड़िआ मुकति न होई ॥
एकु अखरु जो गुरमुखि जापै तिस की निरमल सोई ॥

रागु सूही महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -747

बिरधि भइओ सूझै नही कालु पहूचिओ आनि ॥
कहु नानक नर बावरे किउ न भजै भगवानु ॥

रागु सलोक महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1426

बूझि बैरागु करे जे कोइ ॥
जनम मरण फिरि सोगु न होइ ॥

रागु भैरउ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1145

बिखिआ महि किन ही तृपति न पाई ॥
जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै बिनु हरि कहा अघाई ॥

रागु धनासरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -672

बहु परपंच करि पर धनु लिआवै ॥ सुत दारा पहि आनि लुटावै ॥

रागु सोरठि कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -656

मन मेरे भूले कपटु न कीजै ॥ अंति निबेरा तेरे जीअ पहि लीजै ॥

रागु सोरठि कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -656

बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुम्हारे लेखे ॥
कहि रविदास आस लगि जीवउ चिर भइओ दरसनु देखे ॥

रागु धनासरी रविदास जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -694

बिखै बनु फीका तिआगि री सखीए नामु महा रसु पीओ ॥
बिनु रस चाखे बुडि गई सगली सुखी न होवत जीओ ॥

रागु बिलावलु महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -802

बगा बगे कपड़े तीरथ मंझि वसंनि ॥
घुटि घुटि जीआ खावणे बगे ना कहीअनि ॥

रागु सूही महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -729

बाबा होरु खाणा खुसी खुआरु ॥
जितु खाधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥

रागु श्री राग महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -16

बुरे काम कउ ऊठि खलोइआ ॥
नाम की बेला पै पै सोइआ ॥

रागु सूही महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -738

बाबा मनु मतवारो नाम रसु पीवै सहज रंग रचि रहिआ ॥
अहिनिसि बनी प्रेम लिव लागी सबदु अनाहद गहिआ ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -360

बाणी बिरलउ बीचारसी जे को गुरमुखि होइ ॥
इह बाणी महा पुरख की निज घरि वासा होइ ॥

रागु रामकली महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -935

बिनु सिमरन दिनु रैनि बृथा बिहाइ ॥
मेघ बिना जिउ खेती जाइ ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -269

बहु लसकर मानुख ऊपरि करे आस ॥
पल भीतरि ता का होइ बिनास ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -278

बिसरि गई सभ ताति पराई ॥ जब ते साधसंगति मोहि पाई ॥

रागु कानड़ा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1299

बिना संतोख नही कोऊ राजै ॥
सुपन मनोरथ बृथे सभ काजै ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -279

बिरहा बिरहा आखीऐ बिरहा तू सुलतानु ॥
फरीदा जितु तनि बिरहु न ऊपजै सो तनु जाणु मसान ॥

सलोक महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1379

बिपति तहा जहा हरि सिमरनु नाही ॥
कोटि अनंद जह हरि गुन गाही ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -197

बुढा होआ सेख फरीदु कंबणि लगी देह ॥
जे सउ वरिआ जीवणा भी तनु होसी खेह ॥

रागु सलोक फरीद, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1380

बेद पुरान पड़े का किआ गुनु खर चंदन जस भारा ॥
राम नाम की गति नही जानी कैसे उतरसि पारा ॥

रागु मारू कबीर, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1102

बिरथी कदे न होवई जन की अरदासि ॥
नानक जोरु गोविंद का पूरन गुणतासि ॥

रागु बिलावल महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -819

बिरधि भइआ तनु छीजै देही ॥
रामु न जपई अंति सनेही ॥

रागु मारू महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1027

बलु होआ बंधन छुटे सभु किछु होतु उपाइ ॥
नानक सभु किछु तुमरै हाथ मै तुम ही होत सहाइ ॥

रागु सलोक महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1429

बाबाणीआ कहाणीआ पुत सपुत करेनि ॥
जि सतिगुर भावै सु मंनि लैनि सेई करम करेनि ॥

रागु सलोक महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -951

बिंदु राखि जौ तरीऐ भाई ॥
खुसरै किउ न परम गति पाई ॥

रागु गउड़ी कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -324

बिनु सिमरन जो जीवनु बलना सरप जैसे अरजारी ॥
नव खंडन को राजु कमावै अंति चलैगो हारी ॥

रागु टोडी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -712

बधा चटी जो भरे ना गुणु ना उपकारु ॥
सेती खुसी सवारीऐ नानक कारजु सारु ॥

रागु सूही महला 2, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -787

बहु भेख करि भरमाईऐ मनि हिरदै कपटु कमाइ ॥
हरि का महलु न पावई मरि विसटा माहि समाइ ॥

रागु, श्री राग महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -26

बेद पाठ संसार की कार ॥ पड़ि पड़ि पंडित करहि बीचार ॥

रागु सूही वार महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -791

बिनु बूझे सभ होइ खुआर ॥ नानक गुरमुखि उतरसि पारि ॥

रागु सूही वार महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -791

बंदे खोजु दिल हर रोज ना फिरु परेसानी माहि ॥
इह जु दुनीआ सिहरु मेला दसतगीरी नाहि ॥

रागु तिलंग कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -727

बलिहारी गुर आपणे दिउहाड़ी सद वार ॥
जिनि माणस ते देवते कीए करत न लागी वार ॥

रागु आसा वार महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -462

बहुता जीवणु मंगीऐ मुआ न लोड़ै कोइ ॥
सुख जीवणु तिसु आखीऐ जिसु गुरमुखि वसिआ सोइ ॥

श्री रागु महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -63

बिनु नावै पैनणु खाणु सभु बादि है धिगु सिधी धिगु करमाति
सा सिधि सा करमाति है अचिंतु करे जिसु दाति ॥

रागु सोरठि वार महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -650

बचनु करे तै खिसकि जाइ बोले सभु कचा ॥
अंदरहु थोथा कूड़िआरु कूड़ी सभ खचा ॥

रागु मारू वार महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1099

ब्रहम गिआनी की निरमल जुगता ॥
ब्रहम गिआनी अहंबुधि तिआगत ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -273

बाबा माइआ साथि न होइ ॥
इनि माइआ जगु मोहिआ विरला बूझै कोइ ॥

रागु सोरठि महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -595

बिखु खाणा बिखु बोलणा बिखु की कार कमाइ ॥
जम दरि बाधे मारीअहि छूटसि साचै नाइ ॥

रागु प्रभाती महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1331

बिनु पिर कामणि करे संीगारु ॥ दुहचारणी कहीऐ नित होइ खुआरु ॥

रागु मलार महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1277

बिनु संगती सभि ऐसे रहहि जैसे पसु ढोर ॥
जिनि् कीते तिसै न जाणनी् बिनु नावै सभि चोर ॥

रागु आसा महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 427

बेद् कतेब कहहु मत झूठे झूठा जो न बिचारै ॥
जउ सभ महि एकु खुदाइ कहत हउ तउ किउ मुरगी मारै ॥

रागु प्रभाती कबीर, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1350

बाजीगरि जैसे बाजी पाई ॥ नाना रूप भेख दि्खलाई ॥

रागु सूही महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -736

बहुतु जनम भरमत तै हारिओ असथिर मति नही पाई ॥
मानस देह पाइ पद् हरि भजु नानक बात बताई ॥

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -632

बारह बरस बालपन बीते बीस बरस कछु तपु न कीओ ॥
तीस बरस कछु देव न पूजा फिरि पछुताना बिरधि भइओ ॥

रागु आसा कबीर, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 479

बाली रोवै नाहि भतारु ॥
नानक दुखीआ सभु संसारु ॥

रागु रामकली महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -954

बिनु सतिगुर सेवे जोगु न होई ॥
बिनु सतिगुर भेटे मुकति न कोई ॥

रागु रामकली महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -946

भ

भरमु चुकाइआ सदा सुखु पाइआ ॥
गुर परसादि परम पदु पाइआ ॥

रागु माझ महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -114

भनति नानक भरम पट खूले गुर परसादी जानिआ ॥
साची लिव लागी है भीतरि सतिगुर सिउ मनु मानिआ ॥

रागु धनासरी महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -666

भरमे भाहि न विझवै जे भवै दिसंतर देसु ॥
अंतरि मैलु न उतरै ध्रिगु जीवणु ध्रिगु वेसु ॥

रागु, श्री राग महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -22

भ्रमत फिरे तिन किछू न पाइआ ॥
से असथिर जिन गुर सबदु कमाइआ ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -374

भाँडा धोइ बैसि धूपु देवहु तउ दूधै कउ जावहु ॥
दूधु करम फुनि सुरति समाइणु होइ निरास जमावहु ॥

रागु सूही महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -728

भगत जना कउ राखदा आपणी किरपा धारि ॥
हलति पलति मुख ऊजले साचे के गुण सारि ॥

रागु, श्री राग महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -46

भै बिनु भगति न होवई नामि न लगै पिआरु ॥
सतिगुरि मिलिऐ भउ ऊपजै भै भाइ रंगु सवारि ॥

रागु सूही महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -788

भंडि जंमीऐ भंडि निंमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥
भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु ॥

रागु वार आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -473

भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु ॥
सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥

रागु वार आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -473

भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ ॥
नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ ॥

रागु वार आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -473

भेखि दिखाइ जगत को लोगन को बस कीन ।।
अंत काल काती कटिओ बासु नरक मो लीन ।।

पातिसाही 10 वीं

भाई रे गुरमुखि बूझै कोइ ॥
बिनु बूझे करम कमावणे जनमु पदारथु खोइ ॥

रागु, श्री राग महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -33

भै नासन दुरमति हरन कलि मै हरि को नामु ॥
निसि दिनु जो नानक भजै सफल होहि तिह काम ॥

रागु सलोक महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1427

भूलिओ मनु माइआ उरझाइओ ॥
जो जो करम कीओ लालच लगि तिह तिह आपु बंधाइओ ॥

रागु जैतसरी महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -702

भजहु गोबिंद भूलि मत जाहु ॥
मानस जनम का एही लाहु ॥

रागु भैरउ कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1159

भाई रे भगतिहीणु काहे जगि आइआ ॥
पूरे गुर की सेव न कीनी बिरथा जनमु गवाइआ ॥

रागु, श्री राग महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -32

भै महि रचिओ सभु संसारा ॥ तिसु भउ नाही जिसु नामु अधारा ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -192

भउ न विआपै तेरी सरणा ॥ जो तुधु भावै सोई करणा ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -192

भिंनी रैनड़ीऐ चामकनि तारे ॥ जागहि संत जना मेरे राम पिआरे ॥
राम पिआरे सदा जागहि नामु सिमरहि अनदिनो ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -459

भेखारी ते राजु करावै राजा ते भेखारी ॥
खल मूरख ते पंडितु करिबो पंडित ते मुगधारी ॥

रागु सारंग कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1252

भैरउ भूत सीतला धावै ॥
खर बाहनु उहु छारु उडावै ॥

रागु गोंड नामदेव जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -874

भरमु गइआ भै मोह बिनासे मिटिआ सगल विसूरा ॥
नानक दइआ करी सुखदातै भेटिआ सतिगुरु पूरा ॥

रागु सूही महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -748

भूमीआ भूमि ऊपरि नित लुझै ॥
छोडि चलै तृसना नही बुझै ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -188

भाई रे इउ सिरि जाणहु कालु ॥
जिउ मछी तिउ माणसा पवै अचिंता जालु ॥

रागु, श्री राग महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -55

भी सो सतीआ जाणीअनि सील संतोखि रहंनि् ॥
सेवनि साई आपणा नित उठि संम्रालंनि् ॥

रागु सूही महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -787

भाउ भगति भगवान संगि माइआ लिपत न रंच ॥
नानक बिरले पाईअहि जो न रचहि परपंच ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -297

भाणै चलै आपणै बहुती लहै सजाइ ॥
रैणाइर महि सभु किछु है करमी पलै पाइ ॥

रागु रामकली महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -949

भवजलु बिनु सबदै किउ तरीऐ ॥
नाम बिना जगु रोगि बिआपिआ दुबिधा डुबि डुबि मरीऐ ॥

रागु भैरउ महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1125

भगति वछलु हरि बिरदु है हरि लाज रखाइआ ॥
जनु नानकु सरणागती हरि नामि तराइआ ॥

रागु आसा महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -449

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥
कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥

सलोक महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1427

भउ भगति करि नीचु सदाए ॥
तउ नानक मोखंतरु पाए ॥

रागु आसा वार महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -470

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥ गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -12

अवरि काज तेरै कितै न काम ॥ मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -12

म

माइआ किस नो आखीऐ किआ माइआ करम कमाइ ॥
दुखि सुखि एहु जीउ बधु है हउमै करम कमाइ ॥

रागु श्री राग महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 67

मुखहु हरि हरि सभु को करै विरलै हिरदै वसाइआ ॥
नानक जिन कै हिरदै वसिआ मोख मुकति तिन् पाइआ ॥

रागु वडहंस महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -565

मनहु कठोरु मरै बानारसि नरकु न बाँचिआ जाई ॥
हरि का संतु मरै हाड़ंबै त सगली सैन तराई ॥

रागु आसा कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -484

मनि मैलै सभु किछु मैला तनि धोतै मनु हछा न होइ ॥
इहु जगतु भरमि भुलाइआ विरला बूझै कोइ ॥

रागु वंडहस महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -558

मन रे कउनु कुमति तै लीनी ॥
पर दारा निंदिआ रस रचिओ राम भगति नहि कीनी ॥

रागु सोरठि महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -631

माइआधारी अति अंना बोला ॥
सबदु न सुणई बहु रोल घचोला ॥

रागु वार गउड़ी महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -313

मन के अंधे आपि न बूझहु काहि बुझावहु भाई ॥
माइआ कारन बिदिआ बेचहु जनमु अबिरथा जाई ॥

रागु रमारू कबीर, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1103

महिमा साधू संग की सुनहु मेरे मीता ॥
मैलु खोई कोटि अघ हरे निरमल भए चीता ॥

रागु बिलावल महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -809

मन कामना तीरथ जाइ बसिओ सिरि करवत धराए ॥

मन की मैलु न उतरै इह बिधि जे लख जतन कराए ॥

रागु सोरठि महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 642

मन की मन ही माहि रही ॥

ना हरि भजे न तीरथ सेवे चोटी कालि गही ॥

रागु सोरठि महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -631

माइआ होई नागनी जगति रही लपटाइ ॥

इस की सेवा जो करे तिस ही कउ फिरि खाइ ॥

रागु गुजरी महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -510

मात पिता बनिता सुत बंधप इसट मीत अरु भाई ॥

पूरब जनम के मिले संजोगी अंतहि को न सहाई ॥

रागु जैतसरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -700

महा माई की पूजा करै ॥ नर सै नारि होइ अउतरै ॥

रागु गोंड नामदेव जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -874

मनि संतोख सरब जीअ दइआ ॥

इन बिधि बरतु संपूरन भइआ ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -299

माथे तिलकु हथि माला बानाँ ॥

लोगन रामु खिलउना जानाँ ॥

रागु भैरउ कबीर, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1158

मन की मति तिआगहु हरि जन हुकमु बूझि सुखु पाईऐ रे ॥

जो प्रभु करै सोई भल मानहु सुखि दुखि ओही धिआईऐ रे ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -209

मेरे मन सतिगुरु सेवि सुखु होई ॥

जो इछहु सोई फलु पावहु फिरि दूखु न विआपै कोई ॥

रागु रामकली महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -882

माई मै धनु पाइओ हरि नामु ॥

मनु मेरो धावन ते छूटिओ करि बैठो बिसरामु ॥

रागु बसंत महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1186

माइआ ममता तन ते भागी उपजिओ निरमल गिआनु ॥

लोभ मोह एह परसि न साकै गही भगति भगवान ॥

रागु बंसत महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1186

मेरे राम राइ तूं संता का संत तेरे ॥

तेरे सेवक कउ भउ किछु नाही जमु नही आवै नेरे ॥

रागु सूही महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -749

मीनु पकरि फाँकिओ अरु काटिओ राँधि कीओ बहु बानी ॥

खंड खंड करि भोजनु कीनो तऊ न बिसरिओ पानी ॥

रागु सोरठि रविदास जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -658

मृग मीन भ्रिंग पतंग कुंचर एक दोख बिनास ॥

पंच दोख असाध जा महि ता की केतक आस ॥

रागु आसा रविदास जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -486

मानुख की टेक बृथी सभ जानु ॥

देवन कउ एकै भगवानु ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -281

मारै राखै एको आपि ॥

मानुख कै किछु नाही हाथि ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -281

मनहठि करम कमावदे नित नित होहि खुआरु ॥

अंतरि साँति न आवई ना सचि लगै पिआरु ॥

रागु, श्री राग महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 66

मुह काले तिना निंदका तितु सचै दरबारि ॥

नानक नाम विहूणिआ ना उरवारि न पारि ॥

रागु सोरठि महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -649

माह दिवस मूरत भले जिस कउ नदरि करे ॥

नानकु मंगै दरस दानु किरपा करहु हरे ॥

रागु माझ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -136

मै पेखिओ री ऊचा मोहनु सभ ते ऊचा ॥

आन न समसरि कोऊ लागै ढूढि रहे हम मूचा ॥

रागु देवकंदारी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -534

मत को भरमि भुलै संसारि ॥

गुर बिनु कोइ न उतरसि पारि ॥

रागु गोंड महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -864

मानु करउ तुधु ऊपरे मेरे प्रीतम पिआरे ॥

हम अपराधी सद भूलते तुम बखसनहारे ॥

रागु बिलावल महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -809

मै ताणु दीबाणु तूहै मेरे सुआमी मै तुधु आगै अरदासि ॥

मै होरु थाउ नाही जिसु पहि करउ बेनंती मेरा दुखु सुखु तुझ ही पासि ॥

रागु सूही महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -735

मिहर मसीति सिदकु मुसला हकु हलालु कुराणु ॥

सरम सुंनति सीलु रोजा होहु मुसलमाणु ॥

रागु मझ वार महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -140

महा पुरखा का बोलणा होवै कितै परथाइ ॥

ओइ अंमृत भरे भरपूर हहि ओना तिलु न तमाइ ॥

रागु सूही महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -755

मेरा तेरा छोडिऐ भाई होईऐ सभ की धूरि ॥

घटि घटि ब्रहमु पसारिआ भाई पेखै सुणै हजूरि ॥

रागु सोरठि महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -640

माँगउ राम ते सभि थोक ॥

मानुख कउ जाचत स्रमु पाईऐ प्रभ कै सिमरनि मोख ॥

रागु धनासरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -682

माथै तृकुटी दृसटि करूरि ॥

बोलै कउड़ा जिहबा की फूड़ि ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -394

मरणै की चिंता नही जीवण की नही आस ॥

तू सरब जीआ प्रतिपालही लेखै सास गिरास ॥

रागु श्री राग महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -20

मै मूरख की केतक बात है कोटि पराधी तरिआ रे ॥

गुरु नानकु जिन सुणिआ पेखिआ से फिरि गरभासि न परिआ रे ॥

रागु सोरठि महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -612

मनु हाली किरसाणी करणी सरमु पाणी तनु खेतु ॥

नामु बीजु संतोखु सुहागा रखु गरीबी वेसु ॥

रागु सोरठि महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -595

मनहि कमावै मुखि हरि हरि बोलै ॥

सो जनु इत उत कतहि न डोलै ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -189

मुख की बात सगल सिउ करता ॥

जीअ संगि प्रभु अपुना धरता ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -384

महा अनंदु गुर सबदु वीचारि ॥

पृअ सिउ राती धन सोहागणि नारि ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -370

मुसलमाणु मोम दिल होवै ॥

अंतर की मलु दिल ते धोवै ॥

रागु मारू महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1084

मरणु मुणसाँ सूरिआ हकु है जो होइ मरहि परवाणो ॥

नानक किस नो बाबा रोईऐ बाजी है इहु संसारो ॥

रागु वडंहस महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -580

मेरे साहिबा तेरे चोज विडाणा ॥

जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा आपे सरब समाणा ॥

रागु सोरठि महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -596

मन मेरे भूले कपटु न कीजै ॥

अंति निबेरा तेरे जीअ पहि लीजै ॥

रागु सोरठि कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -656

मै अंधुले की टेक तेरा नामु खुंदकारा ॥
मै गरीब मै मसकीन तेरा नामु है अधारा ॥

रागु तिलंग नामदेव जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -727

मन का सूतकु लोभु है जिहवा सूतकु कूड़ु ॥
अखी सूतकु वेखणा पर तृअ पर धन रूपु ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -472

मनमुख सउ करि दोसती सुख कि पुछहि मित ॥
गुरमुख सउ करि दोसती सतिगुर सउ लाइ चितु ॥

रागु वारा ते वधीक महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1421

मनमुख सेवा जो करे दूजै भाइ चितु लाइ ॥
पुतु कलतु कुटंबु है माइआ मोहु वधाइ ॥

सलोक वारां ते, वधिक महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1422

य

यक अरज गुफतम पेसि तो दर गोस कुन करतार ॥
हका कबीर करीम तू बेऐब परवदगार ॥

रागु तिलंग महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 721

यह माला अपनी लीजै ॥ हउ माँगउ संतन रेना ॥

रागु सोरठि कबीर, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 656

या भीतरि जो रामु बसतु है साचो ताहि पछानो ॥
इहु जगु है संपति सुपने की देखि कहा ऐडानो ॥

रागु बंसत महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1186

या जुग महि एकहि कउ आइआ ॥
जनमत मोहिओ मोहनी माइआ ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 251

यया जनमु न हारीऐ गुर पूरे की टेक ॥
नानक तिह सुखु पाइआ जा कै हीअरै एक ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 253

यासु जपत मनि होइ अनंदु बिनसै दूजा भाउ ॥
दूखु दरद तृसना बुझै नानक नामि समाउ ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 252

यार वे तै राविआ लालनु मू दसि दसंदा ॥
लालनु तै पाइआ आपु गवाइआ जै धन भाग मथाणे ॥

रागु जैतसरी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग - 704

र

राम राम सभु को कहै कहिऐ रामु न होइ ॥
गुर परसादी रामु मनि वसै ता फलु पावै कोइ ॥

रागु गुजरी महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -491

रे मन राम सिउ करि प्रीति ॥
स्रवन गोबिंद गुनु सुनउ अरु गाउ रसना गीति ॥

रागु सोरठि महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -631

रतनु जवेहरु लालु हरि नामा गुरि काढि तली दिखलाइआ ॥
भागहीण मनमुखि नही लीआ तृण ओलै लाखु छपाइआ ॥

रागु रामकली महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -880

रैणि दिनसु परभाति तूहै ही गावणा ॥
जीअ जंत सरबत नाउ तेरा धिआवणा ॥

रागु सोरठि महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -652

रोग मिटाए प्रभू आपि ॥
बालक राखे अपने कर थापि ॥

रागु बसंत महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1184

रोजा धरै मनावै अलहु सुआदति जीअ संघारै ॥
आपा देखि अवर नही देखै काहे कउ झख मारै ॥

रागु आसा कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -483

रते इसक खुदाइ रंगि दीदार के ॥
विसरिआ जिन् नामु ते भुइ भारु थीए ॥

रागु आसा फरीद जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -488

रे चित चरण कमल अराधि ॥
सरब सूख कलिआण पावहि मिटै सगल उपाधि ॥

रागु गुजरी जी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –501

रारा रसु निरस करि जानिआ ॥ होइ निरस सु रसु पहिचानिआ ॥

रागु गउड़ी कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –342

रे बउरे तुहि घरी न राखै कोई ॥
तूं राम नामु जपि सोई ॥

रागु आसा कबीर जी , श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –478

रूपी भुख न उतरै जाँ देखाँ ताँ भुख ॥
जेते रस सरीर के तेते लगहि दुख ॥

रागु मलार वार महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –1287

रज गुण तम गुण सत गुण कहीऐ इह तेरी सभ माइआ ॥
चउथे पद कउ जो नरु चीन्है तिन् ही परम पदु पाइआ ॥

रागु केदार कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –1123

राजु मालु रूपु जाति जोबनु पंजे ठग ॥
एनी ठगीं जगु ठगिआ किनै न रखी लज ॥

रागु मलार महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –1288

रामु गइओ रावनु गइओ जा कउ बहु परवारु ॥
कहु नानक थिरु कछु नही सुपने जिउ संसारु ॥

सलोक महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –1429

राम नामु उर मै गहिओ जा कै सम नही कोइ ॥
जिह सिमरत संकट मिटै दरसु तुहारो होइ ॥

रागु सलोक महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –1429

राम नाम बिनु सभै बिगूते देखहु निरखि सरीरा ॥
हरि के नाम बिनु किनि गति पाई कहि उपदेसु कबीरा ॥

रागु सोरठ कबीर जी 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –654

रामु सिमरि रामु सिमरि इहै तेरै काजि है ॥
माइआ को संगु तिआगु प्रभ जू की सरनि लागु ॥

रागु जैजावंती महला 9, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 1352

राखहु अपनी सरणि प्रभ मोहि किरपा धारे ॥
सेवा कछू न जानऊ नीचु मूरखारे ॥

रागु बिलावल महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – – 809

रूपु न रेख न रंगु किछु तृहु गुण ते प्रभ भिंन ॥
तिसहि बुझाए नानका जिसु होवै सुप्रसंन ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 283

राम जना मिलि भइआ अनंदा हरि नीकी कथा सुनाइ ॥
दुरमति मैलु गई सभ नीकलि सतसंगति मिलि बुधि पाइ ॥

रागु रामकली महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 880

रे मन टहल हरि सुख सार ॥
अवर टहला झूठीआ नित करै जमु सिरि मार ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –986

राज महि राजु जोग महि जोगी ॥
तप महि तपीसरु गृहसत महि भोगी ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –284

ल

लोकि पतीणै न पति होइ ॥
ता पति रहै राखै जा सोइ ॥

रागु धनासरी महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –661

लबु कुता कूड़ु चूहड़ा ठगि खाधा मुरदारु ॥
पर निंदा पर मलु मुखि सुधी अगनि क्रोधु चंडालु ॥

रागु श्रीराग महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –15

लख सिआणप जे करी लख सिउ प्रीति मिलापु ॥
बिनु संगति साध न ध्रापीआ बिनु नावै दूख संतापु ॥

रागु श्री महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 20

लोभु मूआ तृसना बुझि थाकी ॥
पारब्रहम की सरणि जन ताकी ॥

रागु सूही महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग – 742

लबु पापु दुइ राजा महता कूड़ु होआ सिकदारु
कामु नेबु सदि पुछीऐ बहि बहि करे बीचारु ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –468

लख चउरासीह भ्रमते भ्रमते दुलभ जनमु अब पाइओ ॥
रे मूड़े तू होछै रसि लपटाइओ ॥ अंमृतु संगि बसतु है तैरै बिखिआ सिउ उरझाइओ ॥

रागु मारू महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –**1017**

लोगु कहै कबीरु बउराना ॥
कबीर का मरमु राम पहिचानाँ ॥

रागु भैरउ कबीर जी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –1158

लोभ लहरि कउ बिगसि फूलि बैठा ॥
साध जना का दरसु न डीठा ॥

रागु सूही महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –738

लोभ विकार जिना मनु लागा हरि विसरिआ पुरखु चंगेरा ॥
ओइ मनमुख मूड़ अगिआनी कहीअहि तिन मसतकि भागु मंदेरा ॥

रागु टोडी महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –711

लेखै कतहि न छूटीऐ खिनु खिनु भूलनहार ॥
बखसनहार बखसि लै नानक पारि उतार ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –261

लेखा मागै ता किनि दीऐ ॥
सुखु नाही फुनि दूऐ तीऐ ॥

रागु माझ महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –111

लैदा बद दुआइ तूं माइआ करहि इकत ॥
जिस नो तूं पतीआइदा सो सणु तुझै अनित ॥

रागु श्रीराग महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –42

लालच झूठ बिकार मोह बिआपत मूड़े अंध ॥
लागि परे दुरगंध सिउ नानक माइआ बंध ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –252

लेखु न मिटई हे सखी जो लिखिआ करतारि ॥
आपे कारणु जिनि कीआ करि किरपा पगु धारि ॥

रागु रामकली महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –937

लख लसकर लख वाजे नेजे लख उठि करहि सलामु ॥
लखा उपरि फुरमाइसि तेरी लख उठि राखहि मानु ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –358

व

विणु गाहक गुण वेचीऐ तउ गुणु सहघो जाइ ॥
गुण का गाहकु जे मिलै तउ गुणु लाख विकाइ ॥

रागु मारू वार महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –1086

वैदु बुलाइआ वैदगी पकड़ि ढंढोले बाँह ॥
भोला वैदु न जाणई करक कलेजे माहि ॥

रागु मलार महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –1279

वडे वडे जो दीसहि लोग ॥ तिन कउ बिआपै चिंता रोग ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग –188

विणु सतिगुर सेवे सुखु नही मरि जंमहि वारो वार ॥
मोह ठगउली पाईअनु बहु दूजै भाइ विकार ॥

रागु सारंग महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1248

वुठे मेघ सुहावणे हुकमु कीता करतारि ॥
रिजकु उपाइओनु अगला ठाँढि पई संसारि ॥

रागु सारंग महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1251

वरत न रहउ न मह रमदाना ॥ तिसु सेवी जो रखै निदाना ॥
एकु गुसाई अलहु मेरा ॥ हिंदू तुरक दुहाँ नेबेरा ॥

रागु भैरउ महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1136

वडा आपि अगंमु है वडी वडिआई ॥
गुर सबदी वेखि विगसिआ अंतरि साँति आई ॥

रागु सारंग महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1251

विछुड़िआ का किआ वीछुड़ै मिलिआ का किआ मेलु ॥
साहिबु सो सालाहीऐ जिनि करि देखिआ खेलु ॥

रागु सलोक महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -989

वैदा वैदु सुवैदु तू पहिलाँ रोगु पछाणु ॥
ऐसा दारू लोड़ि लहु जितु वंञै रोगा घाणि ॥

रागु मलार वार महला 2, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1279

ववा वैरु न करीऐ काहू ॥ घट घट अंतरि ब्रहम समाहू ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -259

वासुदेव जल थल महि रविआ ॥ गुर प्रसादि विरलै ही गविआ ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -259

विचि संगति हरि प्रभु वरतदा बुझहु सबद वीचारि ॥
मनि हरि हरि नामु धिआइआ बिखु हउमै कढी मारि ॥

रागु कानड़ा दी वार महला 4, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -1314

वेमुहताजा वेपरवाहु ॥
नानक दास कहहु गुर वाहु ॥

रागु आसा महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -376

वाहु वाहु बाणी सचु है गुरमुखि लधी भालि ॥
वाहु वाहु सबदे उचरै वाहु वाहु हिरदै नालि ॥

रागु गुजरी महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -514

वैर विरोध मिटे तिह मन ते ॥ हरि कीरतनु गुरमुखि जो सुनते ॥
वरन चिहन सगलह ते रहता ॥ नानक हरि हरि गुरमुखि जो कहता ॥

रागु गउड़ी महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -259

बिणु सजमि रोगी मरै चिति वैद न रोगु ।।
बेमुख पड़है न इलम जिउ अवगुण सभि ओसु ।।

भाई गुरदास जी, वार-34, पउड़ी-8

वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै ॥ घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ ॥
पंच दूत तुधु वसि कीते कालु कंटकु मारिआ ॥

रागु रामकली महला 3, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -917

वाइनि चेले नचनि गुर ॥ पैर हलाइनि फेरनि सिर ॥
उडि उडि रावा झाटै पाइ ॥ वेखै लोकु हसै घरि जाइ ॥
रोटीआ कारणि पूरहि ताल ॥ आपु पछाड़हि धरती नालि ॥

रागु आसा महला 1, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -465

विणु तुधु होरु जि मंगणा सिरि दुखा कै दुख ॥
देहि नामु संतोखीआ उतरै मन की भुख ॥

रागु वार रामकली महला 5, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी अंग -958